RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 75, अंक : 34-35 एक प्रति 10 : रुपये
रविवार 4 नवम्बर एवं 11 नवम्बर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का ऋषि निर्वाण एवं दीपावली विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली 2018 मंच पर उपस्थित राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद जी, डॉ सत्यपाल जी, डॉ हर्षवर्धन जी, महाशय धर्मपाल जी, सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी, हिमाचल प्रदेश के गवर्नर श्री आचार्य देवव्रत जी, सिक्किम के राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी, सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी धर्मानन्द जी समेत अन्य आर्य महानुभाव...

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में यज्ञ में दस हजार लोगों ने एक साथ यज्ञ करके विश्व कीर्ति-मान स्थापित किया।

मानव जाति पर महर्षि दयानन्द का ऋण

ले०—श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

दीपावली का पर्व हमें प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस की याद दिलाता है। महर्षि दयानन्द द्वारा मानव जाति पर किए गए उपकारों की याद दिलाता है। मानव मात्र के कल्याण के लिए किए गए कार्यों के कारण मानव जाति उनके ऋण से उऋण नहीं हो सकती। दीपावली की रात्रि में ही महर्षि दयानन्द का देहान्त हुआ था। महर्षि दयानन्द का इस संसार में आगमन सूर्य के उदय होने की भांति था तथा उनका इस संसार से जाना सूर्यास्त सा सिद्ध हुआ। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा था कि अगर उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया चारों वेदों का भाष्य पूरा हो जाता तो इस संसार में सूर्य के प्रकाश से भी ज्यादा प्रकाश होता। सूर्य का प्रकाश भौतिक है तथा वेदों का प्रकाश आध्यात्मिक है। भौतिक प्रकाश के बिना मनुष्य की गति सम्भव है परन्तु आध्यात्मिक प्रकाश के बिना मनुष्य की गति सम्भव नहीं है। महर्षि दयानन्द ने जो कार्य किए वे सभी आर्यों के लिए प्रकाश स्तम्भ के समान हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी भारत के लिए अमावस्या की तरह आई। चारों ओर अज्ञानता को अन्धकार था, परतन्त्रता में देश जकड़ा हुआ था। भारतवर्ष का आदर्श गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली खत्म हो चुकी थी , पाखण्ड और अन्धविश्वास के कारण समाज में अनेक कुरीतियों ने जन्म ले लिया था। सूर्योदय पर प्रकाश की रश्मियां अन्धकार को बिंध देती हैं, अन्धकार धीमे-धीमे लुप्त हो जाता है और सारा वातावरण प्रकाशमय हो जाता है। उसी प्रकार महर्षि दयानन्द ने गुरू विरजानन्द से शिक्षा प्राप्त करके अज्ञान रूपी अन्धकार को ज्ञान की रश्मियों से बिंध दिया। उन्होंने पाखण्ड खण्ड़िनी पताका फहराई, पाखण्ड व अन्धविश्वास के विरूद्ध उन्होंने बिगुल बजाया। देश की भोली-भाली अशिक्षित जनता का उन्होंने पथ प्रदर्शन किया। महर्षि दयानन्द एक अच्छे चिकित्सक थे। उन्होंने समाज में फैले हुए रोगों को पहचाना और उनका अच्छी प्रकार से निदान किया। महर्षि दयानन्द ने देखा कि भारतीय अपना स्वाभिमान खो बैठे हैं, अपनी संस्कृति और सभ्यता की उपेक्षा करने लगे हैं और उनका आकर्षण पाश्चात्य संस्कृति की ओर हो रहा है। अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूलकर लोग अपने स्वाभिमान को खो बैठे थे। महर्षि ने संस्कृत भाषा का अध्ययन किया था। वे संस्कृत भाषा के साहित्य से विशेष प्रभावित थे। संस्कृत साहित्य की बहुमूल्यता का उन्हें आभास था। महर्षि दयानन्द की आर्ष ग्रन्थों में आस्था थी। उनका विश्वास था कि वैदिक संस्कृति सबसे प्राचीन संस्कृति है, सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है और उस संस्कृति का आधार सब सत्य विद्याओं की पुस्तक वेद है। महर्षि दयानन्द जी ने नारा दिया था कि प्राचीन संस्कृति की ओर चलो, वेदों से मार्गदर्शन लो। महर्षि दयानन्द की तीव्र इच्छा थी कि लोग अपनी संस्कृति और सभ्यता से प्यार करें, अपने आर्ष साहित्य से प्यार करें, अपनी मातृभूमि के प्रति उन्हें लगाव हो और उसकी रक्षा के लिए वे अपना तन-मन और धन न्योछावर कर दें। स्वाभिमान पुन: जागृत करने का इससे सुन्दर उदाहरण और क्या हो सकता है।

आज भी सम्पूर्ण आर्य जगत् एवं मानव जाति महर्षि दयानन्द की ऋणी है। महर्षि दयानन्द ने सोई हुई मानव जाति को जगाने का कार्य किया। अपनी संस्कृति और सभ्यता को भूल बैठे लोगों को अहसास कराया कि भारतीय संस्कृति प्राचीन और समृद्ध है। महर्षि मनु के माध्यम से उन्होंने यह बताने का प्रयास किया कि सारे संसार के लोग यहां पर चरित्र की शिक्षा लेने आते थे-स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने लोगों को स्वतन्त्रता के प्रति जागरूक किया और विदेशी राज्य की जंजीरों को तोड़ने के लिए लोगों को प्रेरणा दी। नारी जाति को शिक्षित करने के लिए उन्होंने शिक्षा के दरवाजे खोल दिए। छूआछूत की भावना को समाप्त करने का कार्य महर्षि दयानन्द ने किया। इन सभी कार्यों के कारण महर्षि दयानन्द का समाज के ऊपर ऋण है।

महर्षि दयानन्द के ऋण से उऋण होने का एक ही उपाय है कि उनके द्वारा किए गए कार्यों को आगे बढ़ाएं। आर्य समाज की स्थापना करने के पीछे महर्षि दयानन्द का यही उद्देश्य था कि उनके द्वारा प्रारम्भ किए गए कार्य आगे बढ़ते रहें। अगर आर्य समाज महर्षि दयानन्द की भावना के अनुसार कार्य करता तो आज राष्ट्र का स्वरूप कुछ और ही होता। इसलिए हमें चिन्तन और मनन करने की आवश्यकता है कि हमसे कहां पर चूक हुई है। जिस रूप में आर्य समाज का कार्य होना चाहिए था, जो स्थान महर्षि दयानन्द को मिलना चाहिए था, वह क्यों नहीं मिला? इसके पीछे कहीं न कहीं आर्य समाज की कमी है। अगर हम महर्षि दयानन्द के ऋण से उऋण होना चाहते हैं तो पुन: एकजुट होकर महर्षि दयानन्द के मिशन को पूर्ण करने में जुट जाएं। महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प लें कि महर्षि दयानन्द ने समाज सुधार के लिए जिन-जिन कार्यों को प्रारम्भ किया था, आर्य समाज के नियमों के द्वारा जो आदर्श स्थापित किए थे, आर्य समाज के सामने सारे संसार के उपकार करने का जो लक्ष्य रखा था, वेदों के ज्ञान के द्वारा जिस अन्धकार को समाप्त करने का प्रयास किया था, उन सभी कार्यों को, आदर्शों को, लक्ष्यों को अपने जीवन का उद्देश्य बनाएं। महर्षि दयानन्द के कार्यों को अपनाकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द के उपकार

लेo—श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

इस वर्ष की दीपावली के पर्व पर महर्षि दयानन्द को इस संसार से विदा हुए 135 वर्ष हो गए हैं परन्तु उनके द्वारा मनुष्य मात्र पर किए गए उपकार आज भी ज्यों के त्यों हैं। इसलिए सभा से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि दीपावली के पर्व पर विशेष रूप से कार्यक्रमों का आयोजन करके लोगों को उन उपकारों से अवगत कराएं। महर्षि दयानन्द के कार्य केवल आर्य समाज तक ही सीमित नहीं थे अपितु वे सारे संसार के कल्याण की भावना रखते थे।

यजुर्वेद के 31वें अध्याय के सातवें मन्त्र में परमात्मा उपदेश करते हैं कि ऋग्-यजु, साम और अथर्व चारों वेदों को परमात्मा ने रचा है। परमात्मा का ज्ञान असीम है। उस असीम भण्ड़ार जितना ज्ञान अल्पज्ञ जीव के लिए आवश्यक है उतना ज्ञान परमात्मा सृष्टि के आदि में मनुष्य के पथ प्रदर्शक के लिए वेद द्वारा प्रदान करते हैं।

महर्षि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व वेद का ज्ञान लोप हो गया था। पौराणिक पोप लीलाओं का बोलबाला था। ईश्वरीय ज्ञान के स्थान पर मनुष्यकृत् ग्रन्थों का प्रचार था। मनुष्य के रचे ग्रन्थ स्वत: प्रमाण नहीं हो सके। जहां तक वे वेदानुकूल हैं, प्रामाणिक है तथा वेद के प्रतिकूल होने पर अप्रामाणिक हैं। महर्षि दयानन्द सत्य की खोज में घर से निकले और ढूँढते-ढूँढते उनको सच्चे गुरू विरजानन्द मिले जिन्होंने ऋषि दयानन्द के पौराणिक ग्रन्थों को यमुना में प्रवाहित करवा दिया और अष्टाध्यायी, महाभाष्य- वैदिक व्याकरण की शिक्षा दी। आर्ष ग्रन्थों का पाठ कराया और मथुरा से चलते समय दयानन्द से यह दक्षिणा माँगी कि संसार में जाकर वेद का प्रचार करो और वेद विरूद्ध मतों का खण्ड़न करो। ऋषि ने इस प्रतिज्ञा का पालन किया और अनेक कष्ट उठाते हुए गुरू की आज्ञा का पालन करते हुए वेद प्रचार का कार्य किया।

वेद कहता है-जो ज्ञानी उपदेश करता है वो न उपदेश करने वाले ज्ञानी से सर्वश्रेष्ठ है। यजुर्वेद के 25 वें अध्याय के छठे मन्त्र में परमात्मा उपदेश करते हैं:-

विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा अर्थात् ज्ञानी लोगों का प्रथम कर्त्तव्य उपदेश करना है। महर्षि दयानन्द ने लेखनी और व्याख्यान द्वारा सारी आयु वेद का उपदेश दिया। यह बड़ी शोचनीय बात है कि जिस प्रकार अन्य मत, पन्थ और सम्प्रदायों का विस्तार हुआ, उतनी तीव्र गति से आर्य समाज का कार्य नहीं हुआ। समाज सुधार के जितने भी कार्य हैं वो सभी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के द्वारा प्रारम्भ किए गए थे। आजादी के आन्दोलन में सर्वाधिक योगदान आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित लोगों ने दिया। इतना सब होने के बावजूद भी आज कई मत-पथ और सम्प्रदाय आर्य समाज के काफी आगे निकल गए हैं क्योंकि उनकी नींव असत्य मतों पर आधारित है। इनका उद्देश्य लोगों को भ्रमित करके अपने सम्प्रदाय का विस्तार करना है परन्तु इसके विपरीत आर्य समाज का कार्य लोगों को जागरूक करना है। महर्षि दयानन्द के आदेशानुसार आर्य समाज जब तक समाज को जागरूक करने की भूमिका निभाता रहेगा तब तक आर्य समाज का स्थान हमेशा सर्वोच्च रहेगा।

महर्षि दयानन्द के उपकार-महर्षि दयानन्द के उपकारों का वर्णन करना किसी भी मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है। ऐसा कौन सा उपकार है जो महर्षि दयानन्द ने प्राणीमात्र के लिए नहीं किया है। महर्षि ने संसार को यह उपदेश दिया कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। वेद में सब सत्य विद्याएं बीज रूप में हैं। वेद के पठन का अधिकार मनुष्यमात्र को है। मनुष्य जन्म से नीच नहीं कर्म से ऊंचा और नीचा होता है। ऋषि ने छूआछूत को दूर किया।, गरीबों और विधवाओं की सहायता का उपदेश दिया। जाति के अनाथ बच्चों को विधर्मियों के पास जाने से बचाया। स्त्री जाति का सुधार किया। स्त्रियों को वेद पढ़ने का, शिक्षा का अधिकार दिलाया। मूर्ति पूजा के कारण होने वाले पतन से समाज को बचाने का प्रयास किया। पाखण्ड़ों, अन्धविश्वासों पर जमकर प्रहार किया। धर्म के नाम पर होने वाले पाखण्ड़ से समाज को जागरूक करने का प्रयास किया। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के तीसरे नियम में वेद को सब सत्य-विद्याओं की

(शेष पृष्ठ 19 पर)

प्रकाश का पर्व–दीपावली

लेο—श्री सुधीर शर्मा, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

दीपावली हमारा ज्ञान रूपी प्रकाश की ज्योति को प्रज्वलित करने का पर्व है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश होने पर अन्धकार दूर हो जाता है उसी प्रकार मनुष्य के अन्दर ज्ञान रूपी प्रकाश उसके मन की कालिमा, बुद्धि के अन्धकार को भगा देता है और मनुष्य का अन्तःकरण निर्मल और पवित्र हो जाता है। दीपावली का यह पर्व कार्तिक वदी अमावस्या को मनाया जाता है। भारत के लोग इस अन्धकार से भरी हुई अमावस्या को प्रकाश में बदलने का पूरा प्रयास करते हैं। क्योंकि प्रकाश सभी को प्रिय है और प्रकाश में ही संसार के सभी पुण्य कार्य होते हैं। अन्धकार किसी को भी प्रिय नहीं है। तमसो मा ज्योतिर्गमय प्रभु हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो हम यह प्रार्थना करते हैं। क्योंकि सभी प्रकार के पापाचार अन्धकार में होते हैं। इसलिए इस पर्व के पीछे यही भावना काम करती है कि हम अन्धकार को कहीं न रहने दें। हमारे जीवन में कहीं पर भी अन्धकार न हो। हमारे द्वारा किए जाने वाले कर्म भी प्रकाशमय हों। जिस प्रकार बाहर का प्रकाश अन्धकार को दूर करता है, उसी प्रकार ज्ञान का प्रकाश हमारे अन्दर के अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करता है। अन्धकार न हमारे मनों में रहे और न हमारे जीवन में रहे, न हमारे परिवार में रहे, न हमारे घर में रहे और न हमारे देश में रहे।

सम्पूर्ण आर्य जगत् दीपावली के इस पावन पर्व पर आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को याद करता है क्योंकि इसी ज्योति पर्व पर उन्होंने अपना भौतिक शरीर छोड़ा था। यह ठीक है कि सन् १८८३ को दीपावली के दिन वे इस संसार से विदा हुए थे परन्तु उनका जो ज्ञान का दीपक जलाया हुआ था वह उसके बाद भी जलता रहा और आज भी सारे संसार को आलोकित कर रहा है। उन्होंने जो वेद ज्ञान संसार को दिया था वह अब सभी स्थानों पर फैल रहा है। अपनी मृत्यु से आठ वर्ष पूर्व उन्होंने आर्य समाज की स्थापना कर दी थी और उनकी मृत्यु के समय तक अनेकों बड़े बड़े नगरों में आर्य समाजों की स्थापना हो चुकी थी। जहां महर्षि की मृत्यु हुई थी वहां पर परोपकारी सभा की स्थापना उनके काल में ही शुरू हो गई थी। महर्षि दयानन्द जी चारों वेदों का भाष्य करना चाहते थे परन्तु अपने जीवन काल में यजुर्वेद का भाष्य पूरा करके ऋग्वेद के कुछ मण्डलों का भाष्य कर पाये थे और जब उन्हें पता चला कि उन्हें जगन्नाथ के द्वारा विष दे दिया गया है तो उनके मुख से शब्द निकले थे कि जगन्नाथ तू नहीं जानता कि तूने कितना बड़ा अनर्थ कार्य किया है। मेरा बहुत सा कार्य अभी अधूरा रह गया है। परन्तु फिर भी ऋषि को यह संतोष था कि जो ज्योति मैंने आर्य समाज के रूप में प्रज्वलित की है वह भारत में ही नहीं एक दिन सारे संसार में फैल जाएगी और मेरे अधूरे कार्य को आर्य समाज पूर्ण करेगा और यह सच्चाई भी है कि महर्षि के बाद चारों वेदों का भाष्य किया गया जो आज सभी स्थानों पर उपलब्ध है।

महर्षि दयानन्द की इच्छा थी कि सारे संसार में वेदों के प्रचार का कार्य, अनाथ रक्षण, अबला उद्धार, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा तथा लोकोपकार के कार्य निरन्तर चलते रहें। वेद ज्योति का प्रकाश घर घर पहुंचाना उनका उद्देश्य था। वेद के प्रचार प्रसार के लिए उन्होंने अपना सारा जीवन लगा दिया। उन्होंने वेद की ज्योति को सारे संसार में फैला दिया । यह प्रकाश निरन्तर बढ़ता गया इसलिए उन्होंने अपने शरीर छोड़ने का समय भी दीपावली के पर्व को चुना। ताकि इस पर्व को मनाते हुए लोग जीवन में प्रकाश के महत्व को समझें। इसके साथ ही वे यह भी कहते थे कि मेरी मृत्यु के शोक में लोग दुःखी न हों। बल्कि इस पर्व को मनाते हुए मेरे अधूरे कार्य को पूरा करने का संकल्प लेते रहें।

आओ 7 नवम्बर 2018 को दीपावली का पर्व मनाते हुए जहां हम बाहरी अन्धकार को दूर करने का प्रयास करें वहीं पर अपने अन्दर के अज्ञान रूपी अन्धकार को भी दूर करने का प्रयास करें जिस प्रकाश के द्वारा हमारे छल-कपट, द्वेष, मोह, लोभ आदि शत्रुओं का नाश हो। अपने अन्तःकरण में ज्ञान रूपी ज्योति प्रज्वलित करते हुए महर्षि दयानन्द के मिशन को पूरा कर सकें। हम सभी मिलकर स्नेह का दीपक जलायें, श्रद्धा का दीपक जलायें, आपसी मतभेद व वैमनस्य दूर कर के आस्था व विश्वास का दीपक जलायें, अन्तःकरण में ज्ञान का दीपक जलाएं, जिससे आर्य समाज की उन्नति हो। हम दूसरों के अवगुणों को न देखें। जो दूसरों के अवगुणों को देखता है वह दुरात्मा बन जाता है और जो दूसरों के सद्गुणों को देखता है वह धर्मात्मा बन जाता है। आओ इस ज्योति पर्व को मनाते हुए हम अपने अन्दर के बुरे विचारों को इस ज्योति में भस्म कर डालें। जिस महर्षि की दिव्य ज्योति से नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गया था उसी ज्ञान रूपी ज्योति को हृदय में धारण करते हुए हम अपने अन्दर के अन्धकार को दूर करें तभी इस ज्योति पर्व की सच्ची सार्थकता सिद्ध होगी।

महर्षि दयानन्द और दीपावली का पर्व

ले०—श्री अशोक पुरूथी रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद पंजाब

प्रतिवर्ष कार्तिक वदी अमावस्या को भारतवर्ष में दीपावली का पर्व मनाया जाता है। इसी दीपावली के दिन सन् 1883 में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने नश्वर शरीर का त्याग किया था। महर्षि दयानन्द को उनके रसोईये जगन्नाथ ने प्रलोभन में आकर दूध में जहर मिला कर दे दिया था। स्वामी दयानन्द दूध पीकर थोड़ी देर ही सो सके थे कि उन्हें विषम पीड़ा ने बेचैन कर दिया। वे समझ गये कि उन्हें जहर दे दिया गया है। इससे पूर्व भी उन्हें कई बार जहर दिया गया था। इसलिए वे जानते थे कि विष का शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है। महर्षि दयानन्द यौगिक क्रियाओं को जानते थे इसलिए हर बार वे विष को शरीर से निकालने में सफल हो जाते थे। इस बार भी महर्षि दयानन्द ने यौगिक क्रियाओं के द्वारा जहर को निकालने का प्रयास किया परन्तु वे सफल नहीं हुये। क्योंकि यह विष ऐसा था जो शरीर में जाते ही आंतों में बैठ गया और बाहर नहीं निकला। विष की पीड़ा बढ़ती गई और उनका उपचार किया जाने लगा। जोधपुराधीश ने जब यह समाचार सुना तो बहुत परेशान हुये। उनके निर्देशानुसार महर्षि का उपचार जोधपुर में होता रहा। महर्षि को जहर देने का समाचार धीरे-धीरे सारे देश में फैल गया।

16 अक्तूबर 1883 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को आबू पर्वत पर उपचारार्थ लाया गया। डॉ. लक्ष्मणदास जी जो वहां से ट्रांस्फर होकर अजमेर आ रहे थे रास्ते में उन्होंने रूग्ण महर्षि दयानन्द को एक पालकी में लेटे हुए देखा और उनकी असहाय पीड़ा को देखकर तत्काल अपने पास से कुछ दवाई उन्हें दो तीन बार पिलाई। इससे महर्षि की पीड़ा कुछ शान्त हुई। परन्तु महर्षि दयानन्द के पूरे शरीर में जहर फैल चुका था इसलिए उस पर दवाओं का कोई प्रभाव नहीं हो रहा था। 30 अक्तूबर 1883 को दीपावली के दिन जब डा. लक्ष्मण दास के साथ अजमेर के सिविल सर्जन डा. न्यूमन ने उन्हें देखा तो बड़े आश्चर्य से कहा कि- इनकी नस-नस व रोम-रोम में विष फैला हुआ है इन्हें इस से असीम पीड़ा हो रही है परन्तु यह महात्मा शान्तचित्त हैं। यह बड़े साहसी व सहनशील हैं जो अपनी पीड़ा को किसी को भी अनुभव नहीं होने दे रहे। डा. न्यूमन ने भी अपना प्रयत्न किया। परन्तु 30 अक्तूबर को दीपावली के पर्व पर महर्षि दयानन्द ने प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो कहते हुए अपने प्राणों का त्याग कर दिया।

सारे संसार को जगाने वाला, अज्ञानरूपी अन्धकार से लोगों को ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाने वाला, अनाथों, विधवाओं और असहायों का सहारा, विधर्मियों को मुंह तोड़ उत्तर देने वाला, वेदों का उद्धारक, वेदों को घर-घर पहुंचाने वाला, अपनी विद्या से सारे संसार को आलोकित करने वाला दीपक उस दीपावली को स्वयं बुझ गया। जब-जब दीपावली का पर्व आयेगा तब-तब यह पर्व भारत के लोगों को महर्षि की याद दिलाता रहेगा। महर्षि दयानन्द अपने अन्तिम समय में भी यह सन्देश दे कर गए कि जीवन में हमेशा ज्ञान रूपी ज्योति को प्रज्वलित रखना। महर्षि दयानन्द का संकल्प था कि मैं सारे संसार से अन्धकार मिटा कर रहूंगा। महर्षि दयानन्द सूर्य की भांति जब तक इस संसार में चमकते रहे अज्ञान रूपी अन्धकार को मिटाते रहे और अन्तिम समय में भी हम सब को यही प्रेरणा देकर गए कि जैसे अमावस्या की रात को दीप जला कर प्रकाश में बदला जाता है उसी प्रकार तुम भी संकल्प करो कि अज्ञान अन्धकार को समाप्त करके सारे संसार में ज्ञान का प्रकाश फैलायें।

इस प्रकार दीपावली पर्व से महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का गहरा सम्बन्ध है। सम्पूर्ण आर्य जगत दीपावली के पर्व को महर्षि निर्वाण दिवस के रूप में मनाता है। दीपावली के पर्व को दूसरे लोगों की तरह केवल दीप जलाकर और पटाखे चलाकर ही न मनाएं बल्कि इस पर्व के महत्व को समझें। पर्व का अर्थ होता है कि पर्व मनुष्य को पूर्ण करता है, प्रेरणा देता है, आनन्द और उत्साह प्रदान करता है। परन्तु आज पर्व का उद्देश्य केवल खाना-पीना, मौज मस्ती करना ही रह गया है। पर्व को मनाने के पीछे जो भावना होनी चाहिए वह प्रायः लुप्त हो गई है। आज के पर्व केवल मनोरंजन का साधन बन कर रह गए हैं।

आर्य बन्धुओं! दीपावली का पर्व हमारे लिए प्रेरणा का पर्व है। यह पर्व हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने की प्रेरणा करता है। यह पर्व हमें असत्य से सत्य की ओर ले जाने वाला तथा अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाने वाला है। जिस प्रकार एक दीपक से हजारों दीपक जलाये जाते हैं, उसी प्रकार महर्षि दयानन्द रूपी दीपक से प्रेरणा और प्रकाश लेकर हम भी हजारों ज्ञान के दीपक जला सकते हैं। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस हम आर्यों के लिए आर्य समाज की उन्नति के लिए संकल्प लेने का पर्व है। जिस प्रकार महर्षि के प्रयाण का अन्तिम दृश्य देखकर नास्तिक गुरूदत्त पूर्ण रूप से आस्तिक बन गया था और अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज को समर्पित कर दिया था उसी प्रकार हम भी महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र स्वयं पढ़े और दूसरे लोगों को पढ़ने की प्रेरणा दें। आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए हम महर्षि के आदर्शों और सिद्धान्तों के अनुसार कार्य करने का लक्ष्य बनाएं। दीपावली का पर्व तो हर वर्ष आता रहेगा परन्तु इस पर्व से हमने क्या सीखा, क्या प्रेरणा ली यह हमारे लिए महत्वपूर्ण है। महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि देते हुए उनके बताये मार्ग पर चलें।

उस रात की कीमत क्या होगी

ले०—श्री सुरेश शास्त्री सभा कार्यालय जालन्धर

दीवाली की रात के विषय में अपने उद्गार प्रकट करते हुए पं. चमूपति जी ने अपनी कविता में लिखा है कि-

ऐ दुनिया बता, इससे बढ़कर,
फिर और हकीकत क्या होगी।
जां दे दी तलाशे हक के लिए,
फिर और इबादत क्या होगी।
यूं तो हर रात की तारिकी,
देती है पयाम उजाले का।
जिससे यह जहां पुर नूर हुआ,
उस रात की कीमत क्या होगी।

दीपावली की रात प्रत्येक भारतवासियों के लिए महत्वपूर्ण है। इस रात को प्रत्येक भारतवासी खुशी से झूम उठते हैं। अमावस्या की अंधेरी रात को प्रत्येक भारतवासी प्रकाश में बदलने का प्रयास करते हैं। परन्तु उस दीपावली की रात की क्या कीमती होगी जिस रात को सारे संसार को ज्ञान रूपी प्रकाश से प्रकाशित करने वाला दीपक बुझ गया था। इस रात को हमें प्रकाश दिखाने वाले युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द तो इस संसार से चले गये परन्तु अपने बलिदान से एक रास्ता दिखा गए। जब तक हम लोगों ने उस रास्ते का अनुसरण किया है तब तक आर्य समाज उन्नति के शिखर पर मौजूद था। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज ने केवल धार्मिक क्षेत्र में ही नहीं अपितु सभी कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। देश को आजाद कराने में आर्य समाज की महती भूमिका रही है। आजादी के इतिहास लेखक पट्टाभि सीतारम्मैया को लिखना पड़ा कि राष्ट्र को आजाद कराने में 85 प्रतिशत आर्य समाज का योगदान है। यह काल आर्य समाज की उन्नति का चरमोत्कर्ष था। कवि ने बहुत सुन्दर पंक्तियों में महर्षि दयानन्द रूपी दीपक की महत्ता का वर्णन किया है-

दीप प्रदीप्त करता अनेकों दीपों को,
दीपावली संदेश देती जन-जन को।
फिर मानव रहता है क्यों बुझा-बुझा,
जब मनाता प्रतिवर्ष दीवाली को।।
प्राणों का दीया बुझाकर,
तूने दीवाली का है दीप जलाया।
बलिदान देकर ऋष्विर-तूने,
भारत का है भविष्य चमकाया।
जब तक चमकता नभ में सूर्य,
और सितारों की रहेगी शान।।
ऋषिवर दयानन्द तेरे नाम का,
लोग करते रहेंगे गुणगान

दीपावली के पर्व पर हमें चिन्तन करना चाहिए कि क्या हम वास्तव में अन्धकार को दूर कर पाते हैं। थोड़े समय के लिए तो अन्धकार दूर हो जाता है परन्तु रात्रि बढ़ने के साथ-साथ टिमटिमाते हुए दीपकों की ज्योति बुझने लगती है और फिर अन्धकार छाने लगता है। वास्तव में हम अन्धकार को नहीं मिटा पाते। यही स्थिति हमारे जीवन की है। हम अपने जीवन को प्रकाशित करने के लिए अनेकों प्रयास करते हैं। धन-दौलत और संसारिक भौतिक पदार्थों के द्वारा हम अपने आपको सुखी करने का प्रयास करते हैं परन्तु यह प्रयास भी दीपावली के दीपकों के समान क्षणिक होता है। दीपावली के पर्व पर मनुष्य अनेकों दीपक जलाकर प्रकाश करने की भरपूर कोशिश करता है परन्तु फिर भी अन्दर से अशान्त है, दुःखी है, बेचैन है, हताश और निराश है। जब हम इसका विश्लेषण करते हैं तो मनुष्य को शांति नहीं है तो इसका कारण यही है कि हमने बाहर तो प्रकाश किया है, अन्धकार को दूर करने का प्रयास किया है परन्तु ज्ञान को प्राप्त करने का कभी प्रयास नहीं किया। मन अन्धकार ज्ञान की ज्योति से ही दूर होगा। ऐसा व्यक्ति दुःखों से छूटकर सुख एवं शान्ति को प्राप्त करता है। यही दीपावली का पर्व हमें प्रेरणा देता है। तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् अज्ञानरूपी अन्धकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर जाना ही मनुष्य जीवन का वास्तविक उद्देश्य है।

आर्य बन्धुओं यह समय चिन्तन करने का समय है, आर्य समाज के कार्यों को नई दिशा देने का समय है। महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने का समय है। केवल महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाकर ही अपने दायित्व से मुक्त नहीं होना है अपितु महर्षि दयानन्द के संदेश को घर-घर पहुंचाने का संकल्प लेना है। दीपावली का पर्व हमें प्रेरणा देता है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जो वेद रूपी ज्ञान की ज्योति जलाई थी उस ज्ञान की ज्योति को हमेशा जलाए रखे। वेद रूपी ज्ञान की ज्योति

(शेष पृष्ठ 21 पर)

श्रीराम व उनका राम राज्य

ले०—श्री धर्मवीर जी शास्त्री विद्यावाचस्पति जीतपुर (मेरठ)

आदर्श राज्य की जब चर्चा चलती है तो राम राज्य को सादर स्मरण किया जाता है। भारत की आजादी से पूर्व महात्मा गांधी ने भी राम राज्य का सपना लिया था वे चाहते थे जब भारत को आजादी मिलेगी तो हम राम राज्य स्थापित करेंगे। कराची कांग्रेस में स्वाधीन भारत की चर्चा करते हुए उन्होंने जो विचार व्यक्त किए थे उनमें राम राज्य की पूर्ण रूपरेखा व्यक्त की गई थी ऐसी क्या विशेषता थी राम राज्य में इसलिए हम बाल्मीकि रामायण का वह उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जिसमें राम राज्य का वर्णन है-

न पर्यदेवन विधवा न च व्यालकृतं भयम्!

न व्याधिजं भयं चासीत् रामे राज्यं प्रशासत्ति।।

जब तक राम का राज्य रहा तब तक न कोई स्त्री विधवा हुई न किसी मनुष्य को सांप ने काटा, न कोई रोगी था।

निर्दस्यु रभवल्लो को नानार्थ कश्चिदस्पृशत्।

न च स्म वृद्धा बालानां प्रेत कार्याणि कुर्वते।।

श्रीराम के राज्य में डाकू चोरों का भय नहीं था, दूसरों के धन को लोग छूते तक न थे, लेना तो दूर रहा, वृद्ध बालकों का प्रेत कार्य नहीं करते थे अर्थात् थोड़ी आयु में मृत्यु नहीं होती थी।

सर्व मुदितमेवासीत् सर्वा धर्मपरोऽभवत्।

राममेवानु पश्यन्तो नाम्याहिंसन परस्परम्।।

नित्य मूला नित्य फलास्तरवस्तत्र पुष्पिताः।।

काम वर्षा च पर्जन्यः सुख स्पृशश्च मारुतः।।

श्री राम के राज्य में सभी लोग सदा प्रसन्न और सभी धर्म परायण थे, श्री राम उदास होंगे, ऐसा विचार करके किसी को दुःख न देते थे। उनके राज्य में कन्दमूल फल बहुत अधिक होते थे वृक्ष हमेशा फलते-फूलते रहते थे ठीक समय पर वर्षा होती थी वायु सुख देने वाली सदा बहती रहती थी।

ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्रो लोभ विवर्जिताः।

स्व कर्मस्तु प्रवर्तन्ते तुष्यः स्वैरव कर्मभिः।।

बा रा. युद्ध 12-19-100-103-104

ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य शूद्र किसी को भी लोभ न था अपने-अपने काम करते हुए सन्तुष्ट रहते थे। राम राज्य की चर्चा करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी इस प्रकार लिखते हैं :-

दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज्य नहि काहुहि व्यापा। सब नर करहि परस्पर प्रीति चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।। श्रीराम के राज्य में दैहिक दैविक भौतिक ये तीनों दुःख किसी को व्याप्त नहीं थे। सभी मनुष्य आपस में प्रेम से रहते थे और वेदों में बताई हुई नीति (मर्यादा) में तत्पर रहकर अपने-अपने धर्म का पालन करते थे।

अल्प मृत्यु नहि कवनिऊ पीरा, सब सुन्दर सब विरुज शरीरा।।

नहि दरिद्रं कोऊ दुःखी न दीना, नहि कोउ अबुध न लच्छन हीना।।

श्रीराम के राज्य में छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती थी और न किसी को कोई पीड़ा होती थी सभी के शरीर सुन्दर और नीरोग थे न कोई दरिद्र (गरीब) था न दुःखी था और न दीन था। न कोई मूर्ख था न ही शुभ लक्षणों से कोई हीन था।

ऐसा था श्री राम का राज्य। ऐसे राज्य को कौन नहीं चाहेगा। सभी चाहेंगे। इसी राम राज्य का सपना महात्मा गांधी ने स्वतन्त्र भारत के लिए देखा था पर क्या आधुनिक भारत में वे गुण हैं जो राम राज्य में थे ? नहीं। आज वे गुण हमारे भारत में नहीं हैं। तीनों तरह के दुःख आज यत्र-तत्र देखने को मिलते हैं। अब न तो शरीर में स्फूर्ति है, न मन में खुशी है और न समय पर वर्षा होती है अतः भौतिक ताप भी मानव को घेरे हुए हैं। आपस में प्रेम नहीं, भाई-भाई के खून का प्यासा है अल्प समय में मृत्यु हो जाती है, डाकू चोरों का भय सर्वत्र व्याप्त है। ठगी, भ्रष्टाचार का बोलबाला है। किसी को किसी पर भरोसा नहीं है। वस्तुओं में मिलावट है। ईमानदारी और इन्सानियत हमसे कोसों दूर हो चुकी है ऐसे समय में राम राज्य की कल्पना सिर्फ कल्पना बनकर रह गई है।

विचारणीय प्रश्न यह है श्रीराम का राज्य इतना क्यों अच्छा था क्या कारण था कि प्रजा परस्पर प्रेम से रहती थी कोई चोर नहीं था, डाकू नहीं था। किसी को किसी से भय नहीं था। इसके लिए इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि जहां प्रजा का सहयोग था वहां श्रीराम में भी वे गुण विद्यमान थे जो आदर्श राजा में होने चाहिएं। क्योंकि यह कहावत सत्य है ''यथा राजा तथा प्रजा'' जैसा राजा

होता है उसकी प्रजा भी वैसी ही हो जाती है। श्रीराम में ऐसे गुण क्या थे उनका हम संक्षेप में सिर्फ कुछ घटनाओं के रूप में वर्णन करना उपयुक्त समझते हैं लेकिन जरा ठहरें, पहले हम उनकी बोल-चाल तथा व्यवहार की बात लिखना चाहेंगे श्रीराम की बोल चाल कैसी थी-

न च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदु पूर्व च भाषते।

उच्चमानोऽपि परुषन्नोत्तरं प्रातिपद्यते।।

श्रीराम हमेशा ही शान्त रहते थे। बहुत मधुर भाषा बोलते थे अगर कोई कुछ बात कह देता था तो उस को कड़वी बात का जवाब नहीं देते थे।

उनके व्यवहार के बारे में लिखा है-

कदाचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।

न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मवन्तया।।

यदि कोई व्यक्ति श्रीराम के साथ एक भी उपकार का काम कर दे तो वे इतने मात्र से ही सन्तुष्ट हो जाते थे। उनको हानि पहुंचाने के उद्देश्य से कोई सौ बार भी विपरीत काम करता तो वे अपने आत्मिक बल के कारण उसकी परवाह नहीं करते थे।

श्रीराम की विद्वता के बारे में बाल्मीकि महर्षि ने लिखा-

सर्व विद्या व्रत स्नातो यथा तत् सांङवेदवित्।

इष्वस्त्रे च पितुः श्रेष्ठो वेभूष भरतात्भजः बा.रा. अयो. (पूर्ण 9120)

श्रीराम सब विद्याओं को पढ़कर तथा ब्राह्मण व्रत को पूरा करके विधिवत् स्नातक हुए। छः अङ्गों सहित वेद को भी पढ़ा। बाण और अस्त्र शस्त्र संचालन में अपने पिता से भी बढ़ गये।

धर्म कामार्थ तत्वज्ञ स्मृतिर्भान प्रतिभावान्।

लौकिक समयाचारे कृत कल्पो विशारदः।।

श्रीराम ने धर्म, अर्थ और काम के रहस्यों को भली-भांति जान लिया उनकी अनोखी स्मरण शक्ति थी, शासकीय गूढ तत्वों को और दूसरों के विचारों को वे बहुत जल्दी समझ लेते थे। लौकिक धर्म तथा समयोचित आचार-व्यवहार को अच्छी तरह समझते थे और मर्यादा अपने आचरण में लाते थे।

श्रीराम की वीरता उदारता और व्यक्ति के स्वभाव तथा व्यवहार को परखने की क्षमता आदि देखकर उनके बारे में यह प्रसिद्ध था।

द्विः शरन्नाभि संधतेहि स्थापयति नाप्रितान्।

प्रियंददति न चार्थिभ्यो रामो द्विर्नाभि भाषते।।

शत्रु का संहार करने के लिए श्रीराम दो बाण नहीं चढ़ाते अर्थात् एक बाण से ही अपने शत्रु को समाप्त कर देते हैं। अपनी शरण आये की योग्यता को देखकर एक बार ही उचित स्थान पर उसकी नियुक्ति कर देते हैं श्री राम याचक को एक बार में ही निहाल कर देते हैं तथा श्रीराम जो एक बार कह देते हैं उसमें परिवर्तन नहीं होता।

इस श्लोक में व्यक्ति को परखने की क्षमता का जिक्र है आईए एक घटना की तरफ ध्यान करें।

रावण से अपमानित होकर विभीषण जब श्रीराम के दल में उनसे मिलने आया तो सभी का विचार था कि यह शत्रु का भाई है यह हो सकता है हमारे दोष जानने के लिए आया हो। लेकिन श्रीराम इस बात से सहमत नहीं थे उन्होंने कहा बगैर मिले यह कैसे कहा जा सकता है कि उनके मन में क्या है साथियों ने फिर भी विरोध करते हुए कहा कि मिलने पर बातों से भी उसका क्या पता चलेगा बाहर से मीठी-मीठी बातें करता रहेगा और मन घात बनाए रखेगा अतः उसे यहां मत आने दो लेकिन श्रीराम ने जो उत्तर दिया वह उनकी इस योग्यता को बताता है कि वे मनुष्यों के कितने पारसी थे कितनी उनमें सौजन्य भावना थी तथा वे कितने नीतिवान् थे उन्होंने कहा-

आकाशछाद्यमानोऽपि न शक्यो विविगूहितम्।

बलाद्धि विकृणोत्येव भावमन्तर्गत नृणाम्।।6-17-64

मनुष्य कितना ही आकार छिपाने की कोशिश करे फिर भी नहीं छिपा सकता क्योंकि अन्दर के विचार बलपूर्वक आकर आकृति पर प्रकट होते रहते हैं।-यह कितनी मनोवैज्ञानिक बात उन्होंने कही। श्रीराम विभीषण से मिले नमस्ते के बाद हाथ पकड़ कर कहा-आओ लङ्केश। बैठो! जब साथियों ने कहा कि ये लंकेश नहीं उनके भाई हैं तो श्रीराम ने कहा-मैंने सोच समझ कर ही लंकेश शब्द से पुकारा है। अमर्यादित और चरित्रहीन व्यक्ति को राज करने का कोई अधिकार नहीं होता। अतः आज से हमारी नज़र में लंका के सिंहासन का अधिकारी रावण नहीं बल्कि विभीषण है।

श्रीराम ने यह बात अपनी नीति कुशलता होने के नाते कहीं वे अपने कथन की प्रतिक्रिया विभीषण पर देखना चाहते थे इसी पर उसकी वास्तविक भावना जानी जा सकती थी और विभीषण पर उस नीति पूर्ण वाक्य का पूरा असर हुआ और वह कहने लगा कि मैं अपने भाई रावण के अत्याचारों से तंग आ गया हूं दुराचार पूर्ण व्यवहार सत्परामर्श देने पर भी नहीं छूटते बल्कि कोई नेक सलाह भी उसे अच्छी नहीं लगती है। अतः इस अत्याचार से

प्रजा को बचाने के लिए और रावण के नाश के लिए मैं आपके सहयोग में पूरी शक्ति लगा दूंगा।

श्रीराम इस प्रतिक्रिया से बहुत खुश हुए और दोनों ने अपने वचनों का पालन बड़ी ईमानदारी से किया।

ऐसी परख थी उनकी व्यक्ति की और वे व्यक्ति को परखने पर सही स्थान पर उसकी नियुक्ति कर देते थे। यही कारण उनकी विजय का ही बना।

श्रीराम के जहां अनेक गुण थे वहां उनका सबसे बड़ा गुण था कि वे मर्यादा पालक थे अतः उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के नाम से जाना जाता है।

श्रीराम पिता जी से वनों की ओर प्रस्थान करने की आज्ञा मांगने जब उनके पास जाते हैं तो उनके पिता ने कहा-

अहं राघव कैकेयी वरदानेन मोहितः।

अयोध्यायां त्वमेवाद्य भव राजा निगृह्य माम्।।

हे राम मैं कैकेयी को वरदान देकर उसके मोह में फंस गया हूं तुम मुझे पकड़ कर जेल में डाल दो और अयोध्या के राजा बन जाओ।

पिता जी की ऐसी बात सुन कर श्रीराम जो जवाब देते हैं वह जहां उनकी पितृ भक्ति को साबित करता है वहां यह भी साबित करता है कि वे मर्यादा हीन नहीं होना चाहते थे। एक मर्यादा है पिता के दिए वरदान का पालन कराने में सहयोग दे। जेल में पिता को डालना तक मर्यादा हीन कार्य है। एक आदर्श पुत्र होने के नाते उन्होंने जवाब दिया-

भवान् वर्ष सहस्राय पृथिव्या नृपते पति।

अहं तु अरण्ये वत्स्यामि न में राजस्य कांक्षिता।।

बा. रा. अयो. 34 ।27-21

पिता जी आप हजारों वर्ष तक राजा बन कर पृथ्वी पर शासन करें मैं तो अब वन में ही जाकर निवास करूंगा मुझे राज्य की आकांक्षा नहीं हैं।

वे चाहते तो उस समय राजा बन सकते थे लेकिन उस समय ऐसा कार्य मर्यादा से हीन था और वे तब न राजा बने न ही पिता को पकड़ कर जेल में डाला। जैसा कि मुगल शासन के दौरान औरंगजेब ने अपने पिता को कैद में डाल दिया तथा स्वयं गद्दी पर बैठ गये थे। ऐसा सब कुछ उन्होंने मर्यादा का ख्याल रखते हुए ही किया। अतः वह प्रारम्भ से ही मर्यादा पालक थे।

एक पुरुष की एक ही पत्नी होनी चाहिए। श्रीराम ने वेद की इस मर्यादा का पालन किया वन में शूर्पनखा विवाह का प्रस्ताव लेकर आती हैं तरह-तरह के प्रलोभन देती है और अपने साथ विवाह करने की प्रार्थना करती है लेकिन श्रीराम ने उसे स्वीकार नहीं किया। बाली वध की वह घटना भी श्रीराम के मर्यादा पालक होने का सजीव प्रमाण है। जब बाली ने अपने मरने का कारण राम से जानना चाहा तो श्रीराम ने उत्तर दिया-

तदेतत् कारणं पश्य यदर्थ त्वं मया हतः।

भ्रातुर्वर्तसि भार्यायां त्यक्त्वा धर्म सनातनम्।।

देखो मैंने तुम्हें जिस कारण से मारा है वह यह है कि तुमने मर्यादा का उल्लंघन करके अपने छोटे भाई की पत्नी को अपने अधिकार में किया हुआ है।

अस्य त्वं धर्ममाणस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।

रुमायी वर्तसे कामात्स्नुषायां पाप कर्मकृत्।। 8 ।18 ।19

इस सज्जन सुग्रीव की पत्नी की बलपूर्वक अपने अधिकार में करके कामा-तुर होकर तू ऐसा पाप का काम कर रहा है जो अपनी पुत्र वधु के साथ दुराचरण के समान है।

इसी तरह वनवास के प्रारम्भ के दिनों में जब भरत उन्हें लेने पहुंचा तो वे यह कह कर इन्कार कर देते हैं।

कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेश्चः पुत्रिणः स्पृहाम्।।

जो पिता अपने वचन का पालन करने के लिए इस संसार से चला गया उसका पुत्र मैं यदि 14 वर्ष पूर्ण किये बिना लौट जाऊं तो-संसार के अन्य पिता अपने पुत्रों से यह आशा कैसे कर सकेंगे कि उनके पुत्र आगे संसार में उनके पद् चिन्हों पर चल कर उनके प्रण को निभायेंगे। ये सभी उदाहरण उनकी मर्यादा पालना के तथा अन्य श्रेष्ठ गुणों के हैं। श्रीराम परम ईश्वर भक्त थे। आदर्श, भाई, आदर्श पिता, आदर्श पति, आदर्श राजा थे। उनका भाईयों के प्रति प्रेम भी कितना प्रसिद्ध है यह सभी जानते हैं। प्रेम टिका है त्याग पर यदि त्याग नहीं स्वार्थ है तो प्रेम खत्म हो जाता है तो श्रीराम ने प्रेम के मूल त्याग का उदाहरण प्रस्तुत किया। इन्हीं कारणों से श्रीराम इतने लोकप्रिय हो सके। और जब व्यक्ति इतना लोकप्रिय हो जाएं तो अनुशासन के स्थान पर स्व अनुशासन लोगों में स्वयं आ जाता है। अतः उनका राज्य सर्वोत्तम था। परमात्मा करे हम में तथा हमारे नेताओं में वह बुद्धि वह सामर्थ्य आये जिससे हमारा देश फिर से-उसी राम राज्य की तरफ बढ़ सके।

सुसंगत जीवनपथ महर्षि दयानन्द प्रदर्शित

ले० प्रा० भद्रसेन जी वेद-दर्शनाचार्य, साधु आश्रम होशियारपुर

(दो शब्द)-भारतीय धर्म, संस्कृति, परम्परा में जहां दीपावली का एक विशेष स्थान है, वहां आर्य समाज के इतिहास में भी दीपमाला चिरस्मरणीय है। दीपमाला भारतीयों का धार्मिक ऐतिहासिक और ऋतुसम्बद्ध महान् पर्व है। दीपावली से काफी दिन पूर्व ही सफाई-सफेदी आरम्भ हो जाती है और इस स्वच्छता के साथ अन्धकारमयी रात को जगमगाते दीपक इसको ज्योति पर्व सिद्ध करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने महान् कार्यों, विचारों और जीवन से इस पर्व के 'पवित्रता और प्रकाश' इस दोनों रूपों को सर्वथा चरितार्थ किया है।

महर्षि दयानन्द केवल संस्कृत के महान् विद्वान् ही नहीं, अपितु योगी और दूरदर्शी नेता भी थे। महर्षि ने भ्रान्ति निवारण में लिखा है कि मैं तीन हजार ग्रंथों को प्रमाण मानता हूं। इस निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए महर्षि ने न जाने कितने अन्य हज़ारों ग्रंथों को पढ़ा होगा ? सच्चे गुरु की खोज से लेकर आर्य समाज स्थापना तक के तीस वर्ष में महर्षि ने एक बहुत बड़े भूभाग का भ्रमण किया। इस काल में हज़ारों-हज़ार जनों के सम्पर्क में आए। इस सारे अनुभव के आधार पर वेदज्ञान की ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने के लिए महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज की विचारधारा के माध्यम से महर्षि ने जीवन के सर्वांगीण विकास का एक सुसंगत पथ दर्शाया, जो कि शास्त्रसम्मत तथा तर्क संगत भी है, इन दोनों का मणिकांचन संयोग सुसंगत पथ का एक अनोखापन है, क्योंकि हमारे शास्त्रों में परस्पर विरुद्ध एवं असंगत विचार भी मिलते हैं। उनमें से सुनिश्चित, सुसंगत विचारों को प्रकाशित करना ही महर्षि की महान् देन है। इस 'सुसंगत जीवनपथ' का एक-एक पहलू दीप माला के दीपों की तरह जीवन का एक-एक पक्ष प्रकाशित करता है।

दीपमाला के जगमगाते दीपकों की तरह ही वेद का सन्देश है-'ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्' ऋ० 10, 53, 6 अर्थात् बुद्धिपूर्वक बनाए गए प्रकाशमय रास्तों की रक्षा करो, उनको अपनाओं। क्योंकि रास्ते पर चलने से ही सफलता मिलती है, पर इसके लिए रास्ते का स्पष्ट, सुनिश्चित होना बहुत जरूरी है, अन्यथा व्यक्ति इधर-उधर ही भटकता रह जाता है। बिना लाग-लपेट के सही मार्ग बताना ही किसी विद्वान्, गुरु की पहली पहचान है। तभी तो वेद का भक्त वेद के शब्दों में प्रार्थना करता है-

सं पूषन् विदुषा नय, यो अञ्जसानुशास्ति।
य एवेदमिति ब्रुवत्।। ऋ० 6, 54, 1

हे पुष्ट करने हारे! हमें सदा ऐसे विद्वान् से युक्त करो, ऐसा विद्वान् प्राप्त कराओ। जो स्पष्ट, सुनिश्चित बात करे और जो विश्वास के साथ सुनिश्चित बताए। वस्तुतः महर्षि दयानन्द ने आर्ष पद्धति के अनुरूप भाषा, व्याकरण तथा विद्वत्ता के प्रभाव से मुक्त रखते हुए जीवन के सर्वांगीण विकास का एक सुसंगत, सुनिश्चित पथ प्रकाशित किया। प्रिय पाठको! आईए विचार-विमर्श पूर्वक प्रथम इस विशेषांक का अध्ययन करें ओर फिर सत्य प्रतीत होने पर श्रद्धा से इसको अपनायें। वस्तुतः सुसंगत जीवनपथ पर चल कर ही हम महर्षि के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने के अधिकारी बन सकते हैं।

सुसंगत जीवनपथ

यह सर्वमान्य बात है कि संसार का प्रत्येक समझदार व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में प्रगति चाहता है और इसके लिए हर प्रकार का प्रयास करता है, अन्यथा इसके बिना उसको अपना जीवन अधूरा लगता है। प्रगति शब्द में गति छिपी हुई है, यातायात की तरह जिसकी जहां जैसी गति होती है, वह वहां वैसी ही प्रगति करता है। अच्छी गति के लिए आने-जाने का रास्ता सीधा, सरल, सपाट, सक्षम और सुरक्षित होना चाहिए क्योंकि अच्छे, रास्ते पर ही आवागमन ठीक प्रकार से होता है। अच्छा और सुनिश्चित रास्ता ही किसी मंजिल पर पहुंचने के लिए सहायक होता है, क्योंकि लक्ष्य पर पहुंचने के लिए सुनिश्चित दिशा में चलना ही सफलता का प्रथम सोपान है, न कि इधर-उधर भटकना।

संसार में अधिकतर दो प्रकार के रास्ते होते हैं। जिन को हम संगत और असंगत के संक्षिप्त नाम से स्मरण कर सकते हैं। जो आवागमन के लिए उपयुक्त, अनुकूल होता है, उसको संगत और जो यातायात के लिए अनुपयुक्त, प्रतिकूल होता है, उसको असंगत कह सकते हैं। एक सुयोग्य रास्ते को बनाने वाला अवसर मिलने पर ऐसा रास्ता बनाता हैं, जो यातायात के अनुकूल, योजना के अनुरूप और हर तरह से सत्य, शिव तथा सुन्दर हो। पर ऐसा रास्ता वहीं बन सकता है, जहां पथ-विशेषज्ञ को अपनी प्रक्रिया के अनुरूप रास्ता बनाने का पूर्ण अवसर मिलता है। जैसे कि चण्डीगढ़ नगर का निर्माण बाद में हुआ और उससे पहले उसका पूरा नक्शा

बनाया गया। इसलिए वहां पहले सड़कें बनीं, बाद में अन्य भवनों का निर्माण हुआ। इसलिए चण्डीगढ़ जैसे नगरों के रास्ते पुराने शहरों की अपेक्षा संगत और यातायात के लिए सुविधाजनक हैं। दूसरी तरह के रास्ते वहां होते हैं, जहां बस्तियां, गांव, कस्बे, नगर पहले से बसे हुए होते हैं। इसलिए न तो वे पूरी तरह से सीधे और न ही वाहनों के आवागमन के लिए अनुकूल होते हैं। जैसे कि गांव की गलियां और योजक सड़कें।

आज अपने देश में बिना किसी पूर्व योजना के अधिकतर नगर, कस्बे और गांव पहले से बसे हुए हैं। यदि कोई आधुनिकता या देश की एकता की दृष्टि से उन सब बस्तियों को एक सूत्र में पिरोनों के लिए एक राजमार्ग बनाएं, तो जरूरी नहीं कि वह यातायात के अनुकूल हो। राजमार्ग न तो वाहनों के लिए उपयुक्त होगा और न ही वहां यात्रा सरल तथा त्वरित हो सकेगी। जैसे कि गांव वाली सड़कों की स्थिति होती है। यह एक वास्तविक सच्चाई है कि कोई भी पथ विशेषज्ञ ऐसी एक सड़क नहीं बना सकता, जो भारत के सभी नगरों, कस्बों, ग्रामों और उनके मुहल्लों, गलियों से जुड़ी हुई हो।

यदि कोई पथ-विशेषज्ञ सारे देश की एकता या आधुनिक जीवन को सामने रख कर एक ऐसा राजमार्ग बनाना चाहे, जो कि देश में पहले से बसे हुए अधिक से अधिक नगरों, कस्बों, ग्रामों को एक सूत्र में जोड़ सके और इसके साथ वह इस बात का भी ध्यान रखे कि वहां यातायात के लिए वाहनों की भी सुविधा रहे। तो उस पथ विशेषज्ञ को यातायात की सुविधा की दृष्टि से कुछ बस्तियों को छोड़ना ही होगा। जो कि आवागमन में अनुपयुक्त और बाधक बनती हैं तथा जिनके लिए पथ को बार-बार मोड़ना पड़े। कुछ को छोड़े बिना न तो पथ सुसंगत हो सकता है और न ही उपयुक्त। इस लिए यही एक सरल, स्पष्ट बात है कि एक सुसंगत राजपथ की दृष्टि से जो छूट जायें, उनको योजक या सम्पर्क सड़कों के माध्यम से जोड़ा जाए।

परिवहन के पथों की तरह जीवन जीने या सामाजिक व्यवहार के भी दो तरह के रास्ते होते हैं। जिनको हम सुसंगत और असंगत के नाम से याद कर सकते हैं। सुसंगत जीवनपथ की दृष्टि से सुरक्षा सेना और पुलिस की व्यवस्था इसका एक सुन्दर उदाहरण है। इनकी सारी व्यवस्था की प्रक्रिया सुनिश्चित और संगत होती है, जो कि आधारभूत मूलभावना को सामने रखकर बनाई जाती है। सेना और पुलिस में भर्ती होने वाला प्रत्येक व्यक्ति उसके अनुसार चलता है, अन्यथा वह व्यक्ति उसमें से हट जाता है या दण्डित होता है। यह ठीक है कि सामान्य जनता का जीवनपथ उतना नियमित और व्यवस्थित नहीं होता, पर जीवन के आधारभूत मूल सिद्धान्त तो सुनिश्चित हो ही सकते हैं।

पथ एवं परम्परा-

जैसे कहीं आने-जाने के लिए रास्ता सहायक होता है, ऐसे ही जीवन व्यवहार को सरलता से सम्पन्न करने के लिए परम्परा सहायक होती है। क्योंकि जीवन का व्यवहार तभी चलता है, जब हमें उसके करने का ज्ञान होता है। किसी कार्य का ज्ञान या बात का पता उस विषय में शास्त्र, गुरु, परम्परा से चलता है। ये तीनों किसी बात का ज्ञान जितना उपयुक्त देते हैं, उतने ही हमारे लिए सहायक होते हैं। शास्त्र और गुरु के आधार पर ही कोई परम्परा चलती है। परम्परा का ही दूसरा नाम जीने का रास्ता है। कुछ परम्परायें प्राचीन और कुछ नवीन होती है। कुछ परम्परायें अच्छी तरह से परीक्षित होती हैं, तो कुछ कम परीक्षित या जांच करने योग्य होती हैं, कुछ परम्परायें शास्त्रसम्मत होती हैं, तो कुछ मनमर्जी से चलाई जाती हैं। कुछ परम्परायें सार्वभौमिक, सार्वकालिक और सार्वजनिक स्थिति को सामने रख कर चलाई जाती हैं, तो कुछ केवल सामयिक होती है। परम्परा के सम्बन्ध में सत्यार्थ प्रकाश के ये शब्द बहुत ही मार्मिक हैं।

(प्रश्न) क्या तुम परम्परा का भी खण्डन करोगे ?

(उत्तर) नहीं, परन्तु तुम्हारी उलटी समझ को नहीं मान के खण्डन भी करते हैं। (प्रश्न) हमारी उलटी और तुम्हारी सीधी समझ है, इसमें क्या प्रमाण है।

(उत्तर) यही प्रमाण है कि जो तुम पांच सात पीढ़ियों के वर्तमान को सनातन व्यवहार मानते हो और हम वेद तथा सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त की परम्परा मानते हैं। देखो! जिसका पिता श्रेष्ठ वा पुत्र दुष्ट और जिसका पुत्र श्रेष्ठ वा पिता दुष्ट तथा कहीं दोनों श्रेष्ठ वा दुष्ट देखने में आते हैं, इसलिए तुम लोग भ्रम में पड़े हो, मनु महाराज ने क्या कहा है-

येनास्य पितरो याता येन याताः पितामहाः।
तेन यायात्सतां मार्ग तेन गच्छन् न रिष्यते।।4,178।।

जिस मार्ग से इस के पिता, पितामह चले हों, उसी मार्ग में सन्तान भी चले, परन्तु (सताम्) जो सत्पुरुष पिता, पितामह हों, उन्हीं के मार्ग में चलें और जो पिता, पितामह दुष्ट हों तो उनके मार्ग में कभी न चलें। क्योंकि उत्तम धर्मात्मा पुरुषों के मार्ग में चलने से दुःख कभी नहीं होता, इसको मानते हो या नहीं ? हां-हां मानते हैं। और देखो जो परमेश्वर की प्रकाशित वेदोक्त बात है, वही सनातन है और उसके विरुद्ध है, वह सनातन कभी नहीं हो सकती, ऐसे ही सब लोगों को मानना चाहिए या नहीं, अवश्य चाहिए। जो ऐसा न माने उससे कहो कि किसी का पिता दरिद्र हो और उसका पुत्र धनाढ्य होवे तो क्या अपने पिता की दरिद्रावस्था के अभिमान से धन को फैंक देवें।''

(सत्यार्थ प्रकाश, समु 4, पृष्ठ 80)

सारे प्राचीन साहित्य को सामने रख कर जीवन के सुसंगत जीवनपथ पर जब हम विचार करते हैं, तो जीवन को प्रगतिशील, जीवन्त बनाने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो जीवनपथ दर्शाया है, वह सर्वथा सुसंगत सिद्ध होता है। वस्तुत: मानव जाति के कल्याण के लिए महर्षि ने एक ऐसा सुसंगतपथ प्रशस्त किया है, जो कि हर प्रकार से प्रगतिशील तथा जीवन्त है। इस सुसंगत जीवनपथ की एक यह बहुत बड़ी खूबी है, कि यह जहां शास्त्रसम्मत है, वहां यह तर्क संगत भी है, क्योंकि महर्षि दयानन्द जितनी अधिक वेदादि शास्त्र की बात करते थे, उसके साथ उतना ही विचारशीलता, युक्तिसम्पन्नता पर भी ध्यान देते थे। सुसंगत जीवनपथ के निर्णय के लिए परिवहन के राजपथ की तरह विचार, छटाव, विश्लेषण, मीमांसा बहुत जरूरी है। क्योंकि–

भारत एक विशाल और प्राचीन देश है। अत: यहां अनेक प्रकार से (पर्वत, मैदान, पठार, रेतीले और समुद्र तटवर्ती) क्षेत्र हैं। इसीलिए यहां एक साथ कई प्रकार के मौसम, खान–पान, रहन–सहन, वेश–भूषा और भाषा के भेद चलते हैं। यहां समय–समय पर अनेक विचारों के विद्वान् हुए, जिन्होंने अपनी–अपनी समझ, योग्यता, भावना और सामयिकता के अनुसार बहुत तरह का साहित्य रचा। इसीलिए भारतीय साहित्य भी प्राचीन और विशाल है। उस सारे में इतनी अधिक विविधता, विचित्रता (= विरोध) है कि कोई चाहता हुआ भी उस सब का पालन नहीं कर सकता। अत: एक श्रद्धालु के सामने यह समस्या उभरती है, किस किस का ग्रहण करे और किस–किस को छोड़े ? ऐसी स्थिति में महर्षि की दिशा एक विशेष अवलम्ब सिद्ध होती है।

महर्षि दयानन्द का जीवन परिचय–

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन से परिचित पाठक अच्छी प्रकार से जानते हैं कि मूलशंकर ने 21 वर्ष की आयु तक घर पर तथा समीपवर्ती ग्राम की पाठशाला में संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन किया था. तदनन्तर अपनी शिव दर्शन और अमरता की चाहना की पूर्ति के लिए एक दिन वे घर त्याग कर चल दिया। योग शिक्षक गुरु की खोज में मूल से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बन कर लगातार चौदह वर्ष जंगलों, पहाड़ों और मैदानों की खाक छानते रहे। इस काल में जहां कहीं भी योग सिखाने और शास्त्र पढ़ाने वाले योगी, साधु, विद्वान् का पता चला, वहीं श्री चरणों में पहुंचे। जिसने जो भी योगविद्या सिखाई, उसको एक विनीत शिष्य बन सीखा तथा जो शास्त्र पढ़ाया, वह श्रद्धा से पढ़ा। इसके बात मथुरा में ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द दण्डी जी की कुटिया का द्वार खटखटाया। वहां 2–3 वर्ष तक विशेष रूप से अष्टाध्यायी और महाभाष्य का गहरा अध्ययन किया। पुन: गुरु की आज्ञा से आर्ष साहित्य की ज्योति को प्रकाशित करने के लिए भारत के अनेक नगरों में प्रचार और वेदभाष्य का कार्य किया। इस ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने के लिए 1875 में भारत की महानगरी बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। महर्षि ने पं० महेशचन्द्र न्यायरत्न के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए 'भ्रान्ति निवारण' में लिखा है कि 'मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेकर पूर्वमीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रंथों के लगभग मानता हूं।' (दयानन्दीय लघुग्रंथ संग्रह पृ० 198) इस निश्चय तक पहुंचने के लिए महर्षि ने न जाने कितने सहस्र ग्रंथों को पढ़ा होगा। जब कि उन दिनों आज की तरह पुस्तकें इतनी सुलभ भी न थीं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत के प्राचीन और विशाल साहित्य का आलोडन करके जीवन के कल्याण के लिए एक 'सुसंगत जीवनपथ' प्रस्तुत किया। उन्होंने सारे साहित्य की अपेक्षा संस्कृत साहित्य को, उसमें भी आर्ष साहित्य को और उसमें से वेद एवं वेदानुमोदित साहित्य को अधिक महत्त्व दिया। महर्षि का यह दृढ़ मत था कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' क्योंकि वेद सर्वज्ञ, नित्य, शुद्ध, सत्यस्वरूप ईश्वर का ज्ञान है. आर्ष ग्रंथों के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है–'महर्षि लोगों का आशय जहां तक हो सके, वहां तक सुगम और जिस के ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा ऐसी होती है कि जहां तक बने, वहां तक कठिन रचना करनी, जिसको बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सकें, जैसे पहाड़ का खोदना कौड़ी का लाभ होना और आर्ष ग्रंथों का पढ़ना ऐसा है, जैसा एक गोता लगाना, बहुमूल्य मोतियों का पाना। 3, 64।'

इसी आर्ष भावना के अनुरूप सत्यार्थ प्रकाश की रचना की भावना को स्पष्ट करते हुए महर्षि लिखते हैं–

'मेरा इस ग्रंथ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता, जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहलाता है।'

इसीलिए विद्वानों, आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।

जिस से मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में हैं, वे पक्षपात् छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो जो बातें सब के अनुकूल, सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से बरतें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।' भूमिका पृ० 2

'यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात् न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूं, वैसे ही दूसरे देशस्थ व मतोन्नति वालों के साथ भी बर्तता हूं तथा सब सज्जनों को भी बर्तना योग्य है।' भू० पृ० 3

इन उद्धरणों से जहां महर्षि की हार्दिक भावना स्पष्ट होती है, वहां यह भी स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि हर प्रकार से सर्वतन्त्र सत्य को ग्रहण करने पर बल देते हैं। यही महर्षि की 'सुसंगत जीवनपथ' खोजने की एकमात्र कसौटी है। इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि महर्षि ने एकादश समुल्लास में अनेक धर्मों की समालोचना के बाद स्वयं स्पष्ट रूप में लिखा है-

'(पूर्व०) आप सब का खण्डन करने ही आते हो, परन्तु अपने धर्म में सब अच्छे हैं। खण्डन किसी का न करना चाहिए, जो करते हो तो आप इनसे विशेष क्या बतलाते हो ? जो बतलाते हो तो क्या आप से अधिक व तुल्य कोई पुरुष न था और न है ? ऐसा अभिमान करना आप को उचित नहीं, क्योंकि परमात्मा की सृष्टि में एक एक से अधिक, तुल्य और न्यून बहुत हैं। किसी का घमण्ड करना उचित नहीं। (उत्तर०) धर्म सब का एक होता है व अनेक ? जो कहो अनेक होते हैं तो एक दूसरे के विरुद्ध होते हैं व अविरुद्ध ? जो कहो कि विरुद्ध होते हैं, तो एक के बिना दूसरा धर्म नहीं हो सकता और जो कहो अविरुद्ध हैं, तो पृथक् पृथक् होना व्यर्थ है। इसलिए धर्म और अधर्म एक ही है अनेक नहीं। यही हम विशेष कहते हैं कि जैसे सब सम्प्रदायों के उपदेशों को कोई राजा इकट्ठा करे तो एक सहस्र से कम नहीं होंगे...। कोई राजा उन की सभा करके कोई जिज्ञासु होकर... पूछे, हे महाराज! मैंने आजकल न कोई गुरु और न किसी धर्म का ग्रहण किया है। कहिए सब धर्मों में से उत्तम धर्म किस का है, जिस को मैं ग्रहण करूं। (वाममार्गी) हमारा है।... (जिज्ञासु) आप का क्या धर्म है ? (वाममार्गी)... मानना,...सेवन... इत्यादि...।' (अर्थात् क्रमशः सभी ने सामान्य अन्तर के साथ एक ढंग का उत्तर दिया।)

'सहस्रों से पूछकर उनके परस्पर एक दूसरे का विरोध देख, विशेष निश्चय किया... उस सत्य के विज्ञानार्थ...।... जब वह ऐसे पुरुष के पास जा कर बोला कि महाराज! अब इन सम्प्रदायों... में से किसी एक का चेला होऊंगा तो नौ सौ निन्यानवें शत्रु और एक मित्र है, उसको सुख कभी नहीं हो सकता। इस लिए आप मुझ को उपदेश कीजिए, जिस को मैं ग्रहण करूं।'

(आप्त विद्वान्) ये सब मत...।...अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं।...। देख ! जिसमें से ये सहस्र एकमत हों, वह...ग्राह्य है और जिसमें परस्पर विरोध हो, वह कल्पित, झूठा, अधर्म, अग्राह्य है। (जिज्ञासु) इस की परीक्षा कैसे हो ? (आप्त) तू जा कर इन बातों को पूछ। सब की एक सम्पति हो जाएगी। तब वह उन सहस्रों की मण्डली के बीच में खड़ा होकर बोला कि सुनो सब लोगों! सत्य भाषण में धर्म है व मिथ्या में ? सब एक स्वर होकर बोले कि सत्य भाषण में धर्म और असत्य भाषण में अधर्म है। वैसे ही विद्या पढ़ने, ब्रह्मचर्य करने, पूर्ण युवावस्था में विवाह, सत्संग, पुरुषार्थ, सत्य व्यवहार आदि में धर्म और अविद्या ग्रहण, ब्रह्मचर्य न करने, व्यभिचार करने, कुसंग, असत्य व्यवहार, छल कपट, हिंसा, परहानि करने आदि कर्मों में अधर्म है। सब ने एक मत होकर कहा कि विद्यादि के ग्रहण में धर्म और अविद्यादि के ग्रहण में अधर्म है, तब जिज्ञासु ने सब से कहा कि तुम इसी प्रकार सब जने एकमत हो सत्यधर्म की उन्नति और मिथ्या मार्ग की हानि क्यों नहीं करते हो?...। पृ० 349-352

अपने प्राचीन साहित्य की सारी बातों का कोई भी पालन नहीं कर सकता, क्योंकि एक तो वह साहित्य बहुत ही अधिक विस्तृत है और दूसरा उसमें परस्पर पर्याप्त विरोध प्राप्त होता है और तब स्थिति ऐसी हो जाती है, जिसके लिए कहा है-

'मैं निशा में भटकते अनजान खग सा, पथ अपरिचित।
कब चला था, किस जहां से...।'

-परमानन्द शर्मा

हां, उन सभी शास्त्रों में जो बातें एक जैसी हैं, उन का प्रत्येक सरलता से पालन कर सकता है। यही रहस्य महर्षि दयानन्द ने ऊपर के विवेचन में स्पष्ट किया है। अतः एक सुसंगत राजपथ की तरह जीवन के 'सुसंगत जीवनपथ' को अपनाने के लिए असंगत को छोड़ना ही होगा। इसका सर्व अनुभव गम्य पहला उदाहरण- विवाह का है। जिस के सम्बन्ध में विस्तार के साथ सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में महर्षि ने लिखा है। वहां विवाह की प्रत्येक भावना को सामने रखते हुए महर्षि लिखते हैं कि विवाह युवावस्था में ही होना चाहिए। इस सम्बन्ध में 'युवानविन्दते पतिम्...' अथर्व

11, 5, 18 'युवा सुवासा परिवीत आगात्...' ऋग् 3, 8, 4 'नव्या नव्या युवतयो भवन्ती...' ऋग् 3, 55, 16 आदि अनेक वेदादि शास्त्रों के जहां प्रमाण दिए हैं, वहां युक्ति और विचार की दृष्टि से भी यह सिद्ध किया है कि विवाह का प्रयोजन इसी अवस्था में ही सिद्ध होता है। महर्षि के ये शब्द इस दृष्टि से विशेष पठनीय हैं- 'आठ, नौ और दसवें वर्ष पर्यन्त विवाह करना निष्फल है, क्योंकि सोलहवें वर्ष के पश्चात् चौबीसवें वर्ष पर्यन्त विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ, स्त्री का गर्भाशय पूरा और शरीर भी बलयुक्त होने से सन्तान उत्तम होती है।'

समु० 4, पृ० 76

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदर्शित 'सुसंगत जीवनपथ' को समझने के लिए उदाहरण के रूप में दूसरी बात 'नमस्ते' के प्रयोग की है।

पारस्परिक अभिवादन-

जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से मिलता है तो आपस में मिलने पर उनके मन में एक स्वाभाविक इच्छा होती है कि हम एक दूसरे का आदर करें। जिससे परस्पर प्रसन्नता, सम्मान, स्वागत, अभिवादन की भावना व्यक्त हो। अत: सभी देशों, वर्गों, धर्मों में आपस के अभिवादन के लिए कोई न कोई शब्द या शारीरिक चेष्टा की जाती है। जिससे परस्पर सत्कार और अपनापन अभिव्यक्त हो। जैसे कि पाश्चात्य पद्धति के अनुसार कुछ Good morning, Good evening, Good night, हैलो, हाय आदि शब्द बोलते हैं। जिनका भाव है कि प्रात:काल अच्छा हो, सायंकाल अच्छा हो, रात अच्छी हो अर्थात् जिस समय हम मिल रहे हैं, वह अच्छा हो। मुस्लिम-सलाम वालेकम (सलामालेकम), वाले कुम सलाम और सिख-सत् श्री अकाल, जो कि भगवान की ओर संकेत करता है। हिन्दू-जयराम, सीताराम, राम-राम, जयकृष्ण आदि तो और कुछ जय हिन्द, जय जगत् आदि शब्द बोलते हैं। जिनमें व्यक्ति विशेष एवं देश विशेष का स्मरण तथा विजय की कामना है। जो कि सभी के लिए एक सी अभीष्ट एवं उपयुक्त नहीं है और न ही इन शब्दों से अभिवादन की भावना व्यक्त होती है। पाव लागन, दण्डवत, आदेश शब्द केवल छोटे ही बड़ों के लिए या शिष्य गुरु के प्रति व सेवक मान्य के प्रति बोल सकता है, पर सब इन का प्रयोग नहीं कर सकते हैं। कई इस समय परस्पर हाथ मिलाते या हाथ, सिर आदि चूमते हैं। इस प्रकार अभिवादन के लिए अनेक प्रकार के शब्द और ढंग प्रचलित हैं।

वस्तुत: इस समय अवसर के अनुरूप ऐसा शब्द होना चाहिए, जिस का सभी समान रूप से प्रयोग कर सकें तथा उससे पारस्परिक अभिवादन की भावना भी स्पष्ट हो।

आपस के अभिवादन के अवसर के लिए महर्षि दयानन्द ने निम्न विचार व्यक्त किए हैं:

'बड़ों को मान्य दे, उन के सामने उठ कर जाके उच्चासन पर बैठावें, सर्वप्रथम ''नमस्ते'' कहें।'

सत्यार्थ० समु० 2, पृ० 36

--नमस्ते-मैं तुम्हारा मान्य करता हूं।

आर्य्योद्देश्यरत्नमाला

'यह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिए कि 'पूजा' शब्द का अर्थ सत्कार है और दिन रात में जब जब प्रथम मिलें व पृथक् हों, तब तब प्रीतिपूर्वक ''नमस्ते'' एक दूसरे से करें।'

सत्यार्थ० समु० 4, पृ० 89

'जब जब प्रात:, सायं व प्रदेश से आ कर मिलें। तब तब ''नमस्ते'' इस वाक्य से परस्पर नमस्कार कर स्त्री पति...'

संस्कार विधि, विवाह प्रकरण पृ० 186

'इस से उत्तम ''नमस्ते'' यह वेदोक्त वाक्य अभिवादन के लिए नित्य प्रति स्त्री पुरुष, पिता, पुत्र अथवा गुरु शिष्य आदि के लिए है। प्रात: सायं अपूर्व समागम में जब जब मिलें, तब तब इसी वाक्य से परस्पर वन्दना करें।'

संस्कार विधि पृ० 234 की टिप्पणी

'मनुस्मृति 4, 154 के श्लोकों का अर्थ करते हुए संस्कार विधि में लिखा है कि-''विद्यावृद्धों और वयोवृद्धों को नमस्ते अर्थात् उन का मान्य किया करें। जब वे अपने समीप आवें, तब उठ कर मान पूर्वक ले अपने आसन पर बैठावें और हाथ जोड़कर आप समीप बैठें, पूछे हुए उत्तर देवें और जब जाने लगें, तब थोड़ी दूर पीछे पीछे जाकर नमस्ते कर विदा किया करें।' गृहस्थाश्रम प्रकरण पृ० 305

इन उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि पारस्परिक अभिवादन के लिए महर्षि दयानन्द ने नमस्ते शब्द का निर्देश किया है। जोकि अवसर के अनुरूप, तर्क संगत, शास्त्रसम्वत और आधारभूत मूल भावना से हर तरह से मेल खाता है। अभिवादन के अन्य शब्दों की अपेक्षा नमस्ते शब्द इसलिए भी सुसंगत है कि इसका अर्थ अवसर के अनुरूप है। जिस को हम प्रत्येक प्रकार से मौके की बात कह सकते हैं, क्योंकि एक दूसरे के सत्कार का अवसर है, अत: इस समय अवसर के अनुरूप शब्द ही अधिक उपयुक्त है। जैसे कि शिक्षा के समय शिक्षावाचक और खान-पान के अवसर पर खान-पान से सम्बद्ध शब्द ही सुसंगत कहे जा सकते हैं।

नमस्ते करते हुए छोटा बड़ों के प्रति हाथ जोड़ता है और उनको हृदय के पास लाता है तथा कुछ सिर झुका कर 'नमस्ते जी' कहते हैं और दो समान भी ऐसा ही व्यवहार करते हैं। इस स्थिति

का भाव यह है–'अपने मस्तिष्क की समस्त बुद्धि अपने बाहुओं की समस्त शक्ति, अपने हृदय के समस्त प्रेम के साथ मैं आप का नमन करता हूं।'

विद ऑल माई इन्टेलेक्ट इन माई ब्रेन, विद ऑल माई पावर इन माई आर्म्स एण्ड विद ऑल माई लव इन माई हार्ट, आई बाऊ आन टू दी, बड़ा आशीर्वाद के रूप में अपने हाथ से निर्देश करता था।

नमस्ते दो पदों का मेल है, नम: शब्द का अर्थ या भाव है– आदर, सत्कार, अभिवादन और ते=उसकी ओर संकेत करता है, जिस अपेक्षित का स्वागत, जी आयां जी, किया जाता है। इस प्रकार नमस्ते एक पूर्ण (शब्द) वाक्य, समस्तपद है तथा इसका अभिवादन के लिए भारत के प्राचीन साहित्य में भरपूर प्रयोग मिलता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने अभिवादन के लिए 'नमस्ते' के प्रयोग का विधान किया है।

नमस्ते शब्द को सभी एक समान रूप से व्यवहार में ला सकते हैं, कहीं भी यह अट-पटा प्रतीत नहीं होता। जैसे कि प्रेम और प्यार शब्द अपने आप में एक ही हैं, पर अवस्था, अवसर और आपस के रिश्ते के भेद से इस का प्रकरण के अनुसार ही भाव लिया जाता है। भाई-बहन का प्रेम, पति-पत्नी का प्रेम, पिता-पुत्र का प्रेम, माता-पुत्री का प्यार, मित्रों का प्यार आदि। प्रेम की तरह ही नमस्ते की भी व्यवहार में स्थिति है। अत: जहां विद्या एवं आयु में छोटा अपने से बड़ों के प्रति 'नमस्ते जी' कह सकता है, वहां बड़ा भी छोटे के प्रति 'नमस्ते' का व्यवहार कर सकता है। तब इस का भाव आशीर्वाद के रूप में होगा। श्री राम ने सीता के लिए, कठोपनिषद में आचार्य ने नचिकेता के लिए, याज्ञवल्क्य ने जनक के प्रति और श्री कृष्ण ने धृतराष्ट्र के प्रति नमस्ते का प्रयोग किया है। अत: बड़ा भी छोटे के प्रति इसका उच्चारण कर सकता है।

इसके साथ सारा भारतीय साहित्य भी आपस के अभिवादन के लिए 'नमस्ते' के प्रयोग का समर्थक एवं साक्षी है। चाहे वेद, ब्राह्मण, उपनिषद, वेदांग, आदि वैदिक वाङ्मय हो या रामायण, महाभारत और लौकिक संस्कृत का काव्य साहित्य हो, वहां सर्वत्र अभिवादन के लिए नमस्ते शब्द का व्यवहार मिलता है। इसीलिए ही गुरु ग्रन्थ साहिब में 98 बार नमस्ते शब्द आता है। इस विवेचन से स्वत: स्पष्ट हो जाता है कि जीवन को सत्य, शिव, सुन्दर बनाने के लिए जीवन के भिन्न भिन्न अवसरों पर जरूरत के अनुसार महर्षि जीवन का एक 'सुसंगत जीवनपथ दर्शाते हैं।'

सामूहिक नाम-'आर्य'

व्यवहार में सुविधा की दृष्टि से हर चीज का एक नाम होता है, अन्यथा प्रत्येक का पृथक् पृथक् नाम न होने पर परस्पर स्पष्ट भेद नहीं किया जा सकता। स्पष्टता के बिना सरलता नहीं होती और तब गूंगों की तरह केवल संकेत से उलझन ही सामने आती है। जैसे प्रत्येक व्यक्ति का अपना अपना वैयक्तिक नाम होता है, वैसे ही सामूहिक दृष्टि से भी प्रत्येक समूह का एक नाम होता है। मानव समाज में कुछ धर्म की दृष्टि से किसी एक जैसे धर्म को मानते हैं, उन सबका उस एकता के कारण एक सांझा धार्मिक नाम प्रचलित हो जाता है। ऐसे ही कुछ व्यक्तियों में परस्पर कारोबार, आजीविका की दृष्टि से कार्य की समानता होती है। कुछ राजनीतिक विचारों की दृष्टि से एक दल से सम्बन्धित होते हैं और कुछ एक ही देश के नागरिक होने से एक सांझे देशिक नाम से पुकारे जाते हैं।

जैसे हमारे यहां वर्ण (कारोबार, यूनियन) के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि नाम होते हैं। वैसे ही इन सभी वर्ण वालों का कोई न कोई सामूहिक नाम अवश्य होना चाहिए। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती का सिद्धान्त है कि हमारा सामूहिक नाम "आर्य" है, क्योंकि हमारा जितना भी मान्य साहित्य है, उसमें हमारे लिए "आर्य" शब्द का ही प्रयोग मिलता है। केवल वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग आदि वैदिक वाङ्मय में ही नहीं, अपितु रामायण, महाभारत आदि ऐतिहासिक काव्यात्मक ग्रन्थों और उन पर आधारित काव्य, नाटक आदि में भी "आर्य" शब्द का प्रयोग मिलता है। इससे सिद्ध होता है कि हमारा सामूहिक नाम "आर्य" ही है।

आर्य शब्द का प्रयोग इतना अधिक प्रभावपूर्ण और सार्वभौमिक, सार्वकालिक तथा सार्वजनिक है कि किसी भी देश का नागरिक या वर्ग एवं धर्म का सदस्य जहां कहीं, जब कभी इस का प्रयोग करे, किसी भी दृष्टि से किसी काल स्थान पर यह प्रतिकूल नहीं बैठता। प्रयोग करने वाले के जीवन की प्रत्येक प्रगति और आकांक्षा एवं भावना को आर्य शब्द पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है।

आर्य शब्द ऋ 'गतौ' धातु से तथा आर्य शब्द से बनता है, 'अर्य स्वामिवैश्ययो:' पाणिनि सूत्र 3, 1, 103 के आधार पर इसका अर्थ ईश्वर पुत्र, स्वामिपन (= किसी अनुशासन से युक्त) अर्थात् आर्य शब्द श्रेष्ठ, अच्छे अर्थ में आता है। यह श्रेष्ठ, अच्छा और भला अर्थ जहां विशेष प्रेरणाप्रद है, वहां आर्य शब्द उच्चारण में सरल, श्रवण में सरस, मधुर आकर्षक और स्पष्ट अर्थ वाला है और जब कोई अपेक्षित नाम (शब्द) अर्थ की दृष्टि से सार्थक, प्रेरणाप्रद, उच्चारण में सरल और श्रवण में सरल हो, तो 'सोने पर सुहागे' वाली बात हो जाती है। अत: नमस्ते की तरह आर्य शब्द से भी स्पष्ट होता है कि महर्षि के सिद्धान्त जीवन का एक 'सुसंगत जीवनपथ दर्शाते हैं। जो कि शास्त्रसम्मत और तर्क संगत है।'

स्वामी दयानन्द और उनका उद्देश्य

लेo—स्वo श्री स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

प्रियवर पाठक! आप ने स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का नाम तो अवश्य सुना होगा। उनके निर्माण किये हुए वेद भाष्य व अन्यान्य पुस्तकों को भी कदाचित देखने का अवसर मिला होगा। यदि आप आर्य समाज के सदस्य हैं तो आप को उनकी व्यवस्था से भली प्रकार अभिज्ञता होगी परन्तु इतने पर भी क्या आपने श्री स्वामी जी के मुख्य उद्देश्य या सदुपदेशों का प्रयोजन यथोचित समझ लिया है। मुझे जहां तक इसमें 26 वर्ष सामाजिक आयु को व्यतीत कर अनुभव से ज्ञात हुआ है और उसमें सफलता हुई है। मैं कह सकता हूं कि मुझे अति न्यून संख्या ऐसे मनुष्यों की दृष्टिगोचर होती है जो उस महर्षि के मन्तव्यों को भली भांति समझे हों बहुत से लोग स्वामी जी को भारत वर्ष का हितैषी मानते हैं कुछेक उनको हिन्दू रिफार्मर ठहराते हैं। अनेक महाशय उनको देशोद्धारक मानते हैं परन्तु मेरी सम्मत्ति से एक महात्मा संन्यासी के विषय में ऐसा कहना मानो उसको उसके धर्म से पदच्युत कर देना है क्योंकि संन्यासी का धर्म सारे संसार का उपकार करना और प्रत्येक को समान दृष्टि से देखना है। यदि स्वामी दयानन्द केवल भारत वर्ष के हितैषी थे तो अन्य देशों के वे अवश्य अशुभ चिंतक होंगे जो सर्वथा मिथ्या है यदि हिन्दू रिफार्मर थे तो हिन्दू जाति से प्रीति और अन्य से घृणा होगी परन्तु यह प्रत्यक्ष रूप से अल्प बुद्धिजनों के मन्तव्य हो सकते हैं। वास्तव में वह महर्षि एक सच्चा सन्यासी था और सारे संसार के प्राणी मात्र को सुख पहुंचाना उसका उद्देश्य था।

प्यारे मित्रो! यह आपको ज्ञात है कि आदि में सारे संसार में वैदिक धर्म का प्रचार था परन्तु क्रमशः समय के प्रवाह ने वैदिक धर्म को भिन्न-भिन्न टुकड़ों में विभाजित कर दिया इसका प्रमाण यह है कि वैदिक धर्म का सर्वोत्तम नियम अर्थात् यज्ञ अग्निहोत्र को हम प्रत्येक देश तथा धर्म की मूल पुस्तक में पाते हैं और पांच सहस्र वर्ष से प्रथम का कोई ऐसा सम्प्रदाय प्रतीत नहीं होता-अर्थात् यवन मत 1300 वर्ष से, ईसाई मत 1900 वर्ष से, यहूदी 3500 वर्ष से, पारसी मत 4500 वर्ष से, इससे प्रथम वैदिक धर्म के अतिरिक्त कोई मत नहीं पाया जाता जिस से प्रत्यक्ष विदित है कि यह सारे मत वैदिक धर्म के बिगड़ने से उत्पन्न हो गए-इसके अतिरिक्त जिस समय चरक में इस श्लोक को देखते हैं,

वाल्हिका पल्लवाश्चीनाः शुलीका यवनाशका
माषगोधूम मरमहदीशास्त्रवैश्वनिरोचिता।।

अर्थात् महात्मा अत्रि ऋषि ने बलख, ईरान, चीन, अरब, यूनान और उसके पूर्वी विभागों में भ्रमण किया और वहां पर उन्होंने अंगूर उर्द और गेहूं के खाने वाले तथा शास्त्र के अनुकूल अग्निहोत्र करने हारे मनुष्य देखे तो इससे प्रत्यक्ष ज्ञात होता है कि वैदिक धर्म उस समय वर्तमान था और जब महाभारत युद्ध में योग्य विद्वानों के नष्ट हो जाने से उस का प्रचार निर्बल हो गया और अन्त में प्रचार के न रहने से और धनादि की अधिकता से मनुष्यों में दुराचार फैलने लगा और राजा लोग निन्दित कर्मों में प्रवृत्त हो गए ब्राह्मण जो उस समय जगतगुरु कहलाते थे वैदिक धर्म के प्रचार के न होने तथा आलस्य से अपने कर्त्तव्यों से प्रथम ही पतित हो चुके थे वे भी राजाओं के सेवक हो गए हां में हां मिलाने लगे-इसी प्रकार जब सारे देश में उनकी निन्दा होने लगी उस समय जब लोगों ने राजाओं से कहा कि आप यह क्या अधर्म करते हैं ? तब राजाओं ने अपने पुरोहित ब्राह्मणों से मिल कर इस निन्दा से बचने का उपाय किया और संसार में एक ऐसा मत चलाया जिस में सारे कुमार्ग धर्म बन गए-इस मत का नाम वाम मार्ग है-और ''वाम'' का अर्थः ''उल्टा'' अर्थात् उल्टा मार्ग फैलाया जिसमें अधर्म की बातों को धर्म बतलाया अर्थात् ईश्वर के स्थान पर प्रकृति को मानना या विषय सुख को धर्म बतलाना प्रत्यक्ष रूप से वाम मार्ग का उल्टा मार्ग बतला रहे हैं।

भ्रातृगण! इस वाम मार्ग का मूल तैतिरीय शाखा है क्योंकि उसके विषय में जो वृत्तांत महीधर भाष्य में लिखा है उससे प्रत्यक्ष विदित होता है कि उसी समय से वाम मार्ग चला अर्थात् एक समय व्यास जी के चेले वैशम्पायन अपने शिष्य याज्ञवल्क्य से किसी बात पर रुष्ट हो गए और उससे कहा मेरी पढ़ी हुई विद्या को छोड़ दे-याज्ञवल्क्य ने अपने और शिष्यों से कहा कि इसको खा लो-उन्होंने तीतर का रूप धारण कर उसको खा लिया अतएव यह तैतिरीय-शाखा बन गई यह वृत्तांत महीधर ने यजुर्वेद भाष्य की भूमिका में लिखा है। इस लेख से तैतिरीय शाखा की उत्पत्ति ज्ञात हो गई और याज्ञवल्क्य ऋषि के समय का पता लग गया।

पाठकवृन्द! यह गाथा वाममार्ग के प्रारम्भ की है अन्यथा वाममार्गियों में तो बड़ा सिद्ध वही कहलाता है जो वमन को भक्षण कर ले और इस गाथा में तीतर बनना इस बात को सिद्ध करता है कि उस समय वाममार्ग का विशेष प्रचार नहीं हुआ था और न इस प्रकार से सिद्ध उत्पन्न हुए थे-और जितने सूत्र आजकल दृष्टिगत होते हैं जिन में पशुयज्ञ और मांसादि का विधान है उनमें अधिकतर तैतिरीय शाखा तैतिरीय आरण्यक और तैतिरीय ब्राह्मण के दिये जाते हैं जो वाममार्ग के समय में निर्मित हुए हैं और इन्हीं पुस्तकों में पशु हिंसा बतलाई है। अन्यथा पूर्वकाल में तो यज्ञ में हिंसा करना महापाप है जैसा कि ऋग्वेद के मंत्र में लिखा है।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परि भूरसि स इद्देवेषु गच्छति।

अर्थात् हे ज्ञानस्वरूप अग्निनाम परमात्मन तेरा जो हिंसा रहित यज्ञ सारे संसार में व्याप्त हो रहा है वही इस स्थान से देवताओं को जाता है।

बहुत महाशयों को इसमें शंका होगी परन्तु वेद में कम से कम सौ जगह यज्ञ को हिंसा रहित बतलाया है और इस मन्तव्य की पुष्टि में अनेक उदाहरण पाए जाते हैं अर्थात् जिस समय विश्वामित्र ने यज्ञ किया था उस समय राक्षस लोग उनके यज्ञ में मांस विष्टादि डालकर उसको अपवित्र करते थे यदि यज्ञ में हिंसा का निषेध न होता तो विश्वामित्र क्षत्रिय होने पर भी कभी राजा रामचन्द्र जी को सहायतार्थ न बुलाते क्योंकि यज्ञ में क्रोध करना पाप है और हिंसा बिना क्रोध के हो नहीं सकती-इसमें और भी प्रमाण है।

प्रियपाठक! इसका बहुत बड़ा सबूत यह है कि पारसियों को जब अग्निहोत्र का उपदेश हुआ था अर्थात् जिस समय व्यास व जरदुश्त का वार्तालाप हुआ था और व्यास जी ने अग्निहोत्र का उपदेश किया उस समय तो केवल सुगन्धित बल वर्धक और आरोग्य रखने वाले पदार्थों का हवन होता था जैसा कि पारसियों के रिवाज से प्रकट होता है-परन्तु वाममार्ग फैला जाने के पश्चात् जो आर्यावर्त से अन्य देशों में शिक्षा पहुंची वहां यज्ञ के स्थान में पशुवध का प्रचार हो गया-जिस समय इस प्रकार चारों ओर वेदों के अर्थों का अनर्थ करके वेद के नाम से बहुत सी वाममार्गीय पुस्तकें और सूत्र बनाये तो सारे संसार में वेदों की निंदा होने लगी जैसा कि चारवाक ने लिखा है।

त्रयो वेदस्य कर्त्तारो भांडधूर्तनिशाचराः।।

अर्थात् तीनों वेदों के बनाने वाले भांड़ धूर्त और राक्षस हैं। जब इस तरह से वेदों की निन्दा होती थी तो एक राजा की लड़की जिसको वैदिक धर्म में अति प्रीति थी शोक से यह कह रही थीं।

किंकरोमि क्वगच्छामि को वेदानुद्धरिष्यति।।

अर्थात् क्या करूं कहां जाऊं कौन वेदों का उद्धार करेगा उसकी इस बात को सुनकर कुमारिल भट्टाचार्य को इस बात का विचार उत्पन्न हुआ और उत्तर दिया।

मा चितय वरारोहे भट्टाचार्योस्ति भूतले।।

अर्थात् ऐ धर्मानुरागिणी! कुछ चिंता मत कर वेदों के उद्धार के लिए भट्टाचार्य मौजूद है और कुमारिल भट्टाचार्य ने मीमांसा वार्तिक बना कर यज्ञों का नियम ठीक करने का प्रयत्न किया परन्तु वह पूरे तौर से कृत कार्य न हुए।

जब इस प्रकार वाम मार्ग के अधिक प्रचार ने देश में दुराचार फैला रखा था उसी समय कपिल वस्तु के राजा साखी सिंह गौतम को उसके दूर करने के हेतु बहुत भारी विचार पैदा हुआ, उन्होंने राज्य को छोड़ तप करना आरम्भ किया जब अच्छी तरह ज्ञान हो गया तो उन्होंने हिंसक यज्ञों का खण्डन करना आरम्भ किया और उस समय जब वाम मार्गी ब्राह्मण सब जातियों को सेवक बना कर अधर्म में चला रहे थे उनके वर्णाश्रम का भी खण्डन आरम्भ किया, बुद्ध की शिक्षा अधिकतर वैदिक धर्मानुकूल थी परन्तु उस समय जो वाममार्ग के अनर्थों से वैदिक धर्म का लोप हो रहा था उससे बिलकुल विरुद्ध थी-उस समय वाम वार्मी ब्राह्मणों ने बौद्धमत के शास्त्रार्थ में वेदों के प्रमाण अर्थात् उसी वाम मार्गी तैतिरीय शाखा के प्रमाण देने आरम्भ किये महात्मा बुद्ध देव जोकि संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान तो थे ही नहीं इस कारण स्वयं तो पदार्थ विचार न कर सकते थे दूसरे उस समय में वेदों के अनुकूल पुस्तकें भी कम प्राप्त होती थीं जिससे उन को भली भांति शिक्षा होती।

जब उन्होंने देखा कि वेदों के जमघटे को साथ लेकर वाम मार्ग को दूर नहीं कर सकते और संसार का उपकार नहीं कर सकते हैं तो उसका उपाय उनको यही सूझा कि वेद को मानना छोड़ दें और जहां तक हो सके इन हिंसा करने वाले यज्ञों को बंद करने के वास्ते अनेक प्रकार और उनकी जड़ वेदों के न्यून करने का प्रयत्न किया अतएव उन्होंने शूद्रों से कार्य आरम्भ किया और थोड़े ही दिनों में सारे भारतवर्ष में हलचल मच गया जब विरोधियों ने देखा कि गौतम वेदों को नहीं मानता तो उन्होंने उससे कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं।

बुद्धदेव ने उत्तर दिया कि हम ऐसे ईश्वर को भी नहीं मानते जिस ने ऐसी पुस्तकें बनाई हों जिसमें हिंसा करने का उपदेश हो अस्तु इस प्रकार महात्मा बुद्धदेव धर्म के एक हिस्से को अपने मन्तव्यानुसार विषयुक्त समझ कर उस से पृथक हो गए और शेष भाग का प्रचार करने लगे जब इस प्रकार से ज्ञान

का मुख्य भाग अर्थात् जीव, प्रकृति, ईश्वर इन तीन में से ईश्वर निकल गया और शेष दो तिहाई धर्म अर्थात् जीव और प्रकृति का प्रचार होता रहा।

प्यारे मित्रो! इस त्रुटि को पूरा करने के वास्ते स्वामी शंकराचार्य जी महाराज ब्रह्म की सिद्धि के वास्ते कटिबद्ध हुए और सारे देश में भ्रमण कर बौद्ध मत का खण्डन किया और जहां तक हो सका अपना कुल समय ब्रह्म सिद्धि में व्यय किया-क्योंकि उस समय तक मनुष्यों में प्रकृति और जीव को छोड़ कर दूसरे किसी स्थान में दिखलाना कठिन था इसलिये उन्होंने प्रत्येक वस्तु को दिखलाना शुरू किया और षट पदार्थ अनादि बताकर पांच को सान्त बतलाया अभी महात्मा शंकराचार्य को अपना पूरा सिद्धान्त दिखलाने का अवसर मिला ही नहीं था देश के दुर्भाग्य से वह भारत का भानु इस असार संसार से चलता हुआ परन्तु जितना काम इस महात्मा ने किया उससे मालूम होता है कि यदि इस ऋषि को दस वर्ष तक अधिक जीवित रहने का अवसर मिलता तो यह भारत का उद्धार कर देते और वैदिक धर्म को जो महाभारत के बाद हानि पहुंची थी उसकी पूर्ति हो जाती परन्तु तो भी 22 वर्ष की अवस्था से 32 वर्ष की अवस्था तक इस ब्रह्म प्रचारक के सामान्यतया और आर्यावर्त्त में विशेषतया ब्रह्म को फैला दिया।

भ्रातृ वर्गो। महात्मा शंकराचार्य के पश्चात् उनके चेले यद्यपि बड़े-बड़े पण्डित हुए जिन्होंने अद्वैत वाद को सिद्ध करने के लिए सहस्रों नए प्रमाण गढ़े और सैंकड़ों पुस्तकें लिख डालीं परन्तु यह वैदिक धर्म को उस मूल तत्व से बहुत दूर ले गये अर्थात् उन्होंने प्रकृति और जीव के अस्तित्व से बिल्कुल इन्कार कर दिया और षट अनादि मान कर पांच को अन्तवाला बतलाने के मन्तव्य को बिल्कुल न समझा-महात्मा शंकराचार्य का तो यह सिद्धान्त था कि जो वस्तु उत्पन्न होती है वह अनित्य है और जो उत्पत्ति से रहित है वह नित्य है।

अतएव यह छ: पदार्थ अनादि अर्थात् उत्पत्ति शून्य हैं अतएव नित्य हैं परन्तु ब्रह्म तो सर्वव्यापक है अर्थात् वह अनन्त है और शेष पांच पदार्थ जीव, ईश्वर, माया, अविद्या और इनका सम्बन्ध यह पांचों सीमाबद्ध हैं यहां पर जीव के अर्थबद्ध जीव के हैं और ईश्वर मुक्त जीव को कहते हैं अविद्या जीव का गुण है, माया प्रकृति का नाम है।

हमारे कुछेक मित्र यह कहेंगे कि तुम ने यह बात मन गढ़न्त कही है परन्तु जहां जीव का लक्षण किया है वहां अविद्या से युक्त चेतन को जीव माना है अविद्या के दो अर्थ हो सकते हैं एक तो ज्ञान का अभाव दूसरे विपरीत ज्ञान अगर अविद्या के अर्थ ज्ञान के अभाव के मानें तो ठीक नहीं क्योंकि 'चेतन' ज्ञान वाले को कहते हैं और जिस में ज्ञान का अभाव है वह चेतन ही नहीं कहला सकता इस हेतु से अविद्या का विपरीत ज्ञान के लिए जाते हैं यहां उलटा ज्ञान बन्धन अर्थात् दु:खोत्पत्ति का कारण है और इसी के नाश से मुक्ति होती है जब मिथ्याज्ञान का नाश हो गया तो उसमें अल्पज्ञता जो जीव का स्वाभाविक गुण है मौजूद है परन्तु मिथ्याज्ञान बिलकुल अलग हो गया अब यह बन्धन से खालीं है इसी को शुद्ध सत्य प्रधान उपाधि सहित अर्थात् ईश्वर कहते हैं।

प्रिय पाठक! क्योंकि आदि और अन्त दो प्रकार से होते हैं एक तो देश योग से दूसरा काल योग से जो वस्तु काल योग से आदि वाली है वह काल से अन्त वाली होगी क्योंकि नदी एक किनारे की कहीं होती ही नहीं जिस का आदि है उसका अन्त अवश्य है और जो वस्तु देश योग से अनन्त भी होगी परन्तु यह नहीं हो सकता कि जो वस्तु काल योग से अनादि है वह देश योग से भी अनन्त हो क्योंकि परमाणु काल योग से अनादि हैं परन्तु देश योग से सान्त हैं यहां महात्मा शंकाराचार्य का यह प्रयोजन था कि काल योग से छ: वस्तुएं अनादि और अन्त वाली केवल एक ब्रह्म ही अनन्त है।

सज्जन महाशयो! महात्मा शंकराचार्य के प्रयोजन को न समझ कर लोगों ने ऐसे झगड़े उत्पन्न किये कि महात्मा शंकर का जो सिद्धान्त वैदिक धर्म की उस कभी को पूरा करने का था जो महात्मा बुद्ध ने संस्कृत न जानने और पण्डितों के वाम मार्गी होने के कारण अयुक्त समझ काट दिया था परन्तु दुर्भाग्यवश शंकराचार्य के चेलों के बिना समझे या किसी अपने प्रयोजन से वैदिक धर्म के उस हिस्से को जिस को बुद्ध ने स्थिर रखा था बिल्कुल उड़ा दिया केवल वह भाग जिसको शंकराचार्य बुद्ध मत में मिला कर उसकी त्रुटि को पूरा करना चाहते थे उसी को रख लिया अर्थात् जीव प्रकृति जिसको बौद्धमत वाले मानते थे शंकराचार्य इसमें ब्रह्म को मिला कर इसको पूरा वैदिक धर्म बनाना चाहते थे परन्तु उनके चेलों ने प्रकृति और जीव को उड़ा कर केवल ब्रह्म तथा एक तिहाई वैदिक धर्म का प्रचार शुरू किया और शेष पर विशेष ध्यान न दिया अब वैदिक धर्म के दो भाग हो गए एक बौद्धमत दूसरा अद्वैत वाद दो तिहाई भाग तो बौद्धमत ने ले लिया और एक भाग शंकराचार्य के चेलों अर्थात् अद्वैत वादियों ने लिया परन्तु यह तिहाई भाग विशेषत: प्रकाशक और हितकारी था इस वास्ते यह प्रबल पड़ा और पृथ्वी के प्रत्येक विभाग में फैल गया।

राष्ट्रीय जागरण और महर्षि दयानन्द

लेο श्री भगवान देव 'चैतन्य', एमο एο साहित्यालंकार 190/एस-3 सुन्दरनगर

गुलामी से बड़ा अभिशाप कोई और नहीं हो सकता है। यह गुलामी चाहे व्यक्तिगत हो या सामूहिक, किसी राष्ट्राध्यक्ष की हो या अन्य धार्मिक और सामाजिक मान्यताओं की। इस विभिन्न प्रकार की गुलामी को तोड़ कर मुक्त होना ही सब से बड़ा वरदान है। जहां तक भारतवर्ष का प्रश्न है, अपने ज्ञान और शौर्य के कारण यह समस्त विश्व का गुरु रहा। इसे कभी चरमोत्कर्ष प्राप्त था। मगर ज्यों-ज्यों ज्ञान को झूठी मान्यताओं तथा खोखले आडम्बरों और शौर्य को आलस्य एवं प्रमाद ने अपने पंजों में समेट लिया तभी से यह पतन के गर्त की ओर अग्रसर हुआ। एक समय वह भी आया कि राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता पूरी तरह छिन्न-भिन्न हो गई और इस राष्ट्र को परतन्त्रता के शिकंजे में जकड़ जाना पड़ा। मुगलों और अंग्रेजों का शासन हमारी बची-खुची उत्कृष्ट मान्यताओं और परम्पराओं को समाप्त करने के लिए काफी था। इस राष्ट्र के मूल निवासी की स्थिति निरन्तर गुलामी का बोझ ढोते-ढोते एक ऐसे कीड़े के सदृश हो गई जिस की रीढ़ की हड्डी ही न हो। खड़ा होना तो दूर रहा, वह तो सही ढंग से रेंगने के योग्य भी नहीं रहा। बीच-बीच में भारतभूमि पर इक्के-दुक्के लीक से हट कर वीर पुरुष भी हुए, जिन्होंने यदा-कदा इस परिस्थिति से उबारने का प्रयास भी किया। मगर राष्ट्र और राष्ट्र के नागरिकों को ऐसी पतनावस्था से ऊपर उठाने के लिए किसी ढुल-मुल नीति की नहीं बल्कि एक विधिवत् योजना की आवश्यकता थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती एक ऐसे ही दिव्य महापुरुष थे, जिन्होंने बड़ी गहराई से भारत की इस पतनावस्था का अध्ययन कर के कारगर उपाय भी हमारे समक्ष रखा। उन्होंने अपनी दृष्टि बहुत पीछे दौड़ाई और पाया कि हमारे पतन का आरम्भ महाभारत के अपार नरसंहार से हुआ क्योंकि उस समय बड़े-बड़े विद्वान् और शूरवीर मारे गए जिन के अभाव में हमारे धर्म से नैतिकता और सच्चरित्रता का निष्कासन होकर उस में आडम्बर एवं दिखावे का समावेश हुआ। जब व्यक्ति इन गुणों से विहीन हो जाता है तो व्यक्तिगत और सामाजिक पतन होना स्वभाविक है। इसी पतन ने धीरे-धीरे ऐसा दीन-हीन बना दिया कि हम अपना सर्वस्व खोकर मानो अपने ही कन्धों पर अपनी ही लाश लिये नाममात्र का जीवन जीने पर बाध्य हो गए। महर्षि को जब कारण का पता लगा वे इस के निवारण के लिए मन वचन और कर्म से जुट गए। उन्होंने सर्वप्रथम इस राष्ट्र की प्रगाढ़ निद्रा में सोई हुई जनता को जगाने का संकल्प लिया। धर्म व्यक्ति के आचार-व्यवहार से जुड़ी एक कड़ी है जो उसकी चतुर्दिक उन्नति का आधार है। उसी टूटी कड़ी को जोड़ने का बीड़ा महर्षि दयानन्द ने उठाया और राष्ट्र में एक नई चेतना की लहर पैदा की। एक कुशल चिकित्सक के समान उन्होंने पहले रोग के कारण का पता लगाया और फिर उपचार में जुट गए। महर्षि द्वारा प्रस्तुत यह धार्मिक जागरण ही राष्ट्रीय जागरण का सब से प्रमुख कारण बना। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के शब्दों में ''महर्षि दयानन्द उन महापुरुषों में से थे, जिन्होंने आधुनिक भारत का निर्माण किया। उनके आचार सम्बन्धी पुनरुत्थान के कारण ही यह सम्भव हुआ। नेता जी के इन शब्दों में वह सच्चाई है जिसे आज विस्मृत किया जा रहा है। धर्म व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के प्रत्येक क्रियाकलाप का एक अभिन्न अंग है। इसीलिए इस के पुनरुत्थान ने जागरण के चतुर्दिक् दरवाजे खोल दिए। महर्षि दयानन्द के इसी प्रयास ने उन्हें समाज सुधारकों की पंक्ति में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया। समाज और राष्ट्र के लिए उन के योगदान का योगी अरविन्द्र में इन शब्दों से पता चलता है, ''यदि सभी समाज सुधारकों को पर्वत शृंखलाएं मान लिया जाए तो दयानन्द समस्त गिरिशिखरों के मध्य एक ऐसे सर्वोच्च शिखर हैं जो अपनी दिव्यता एवं कर्त्तव्यता के कारण अपने आप में ज्योतिर्मय हैं और चहुं ओर प्रकाश-विकीर्ण कर रहे।''

महर्षि ने केवल छुट-पुट सुधार नहीं किया बल्कि उनकी दृष्टि भारतीय जर्जर समाज के आमूलचूल परिवर्तन पर थी। यह ठीक है कि समय से पूर्व ही सम्वत् 1957 की क्रांति का प्रस्फुटन हो जाने तथा अपने ही भीतर के कुछ राष्ट्रद्रोही गद्दारों के कारण यह क्रान्ति असफल रही, मगर महर्षि दयानन्द इस असफलता से निराश व हताश नहीं हुआ बल्कि विधिवत् दुगुने उत्साह से वे कार्य क्षेत्र में कूद पड़े। उनकी कार्य पद्धति बहुमुखी थी। उन्होंने धार्मिक जगत् में तहलका मचा दिया। भाग्य के भरोसे हाथ पर हाथ रख कर बैठे अकर्मण्य लोगों को उन्होंने कर्मवाद का पाठ

पढ़ा कर अंगड़ाई लेने पर बाध्य किया। केवल अपनी मुक्ति के लिए जंगलों की राह पकड़ने वाले ब्रह्मवादियों के समक्ष उन्होंने त्रैतवाद का अमर वैदिक उपदेश रखा कि परमात्मा जीवात्मा और प्रकृति ये तीन अनादि तत्त्व हैं। जीवात्मा परमात्मा का अंश नहीं बल्कि वह कर्म करने में स्वतन्त्र है। व्यक्ति चाहे तो अपने लिए स्वयं स्वर्ग का निर्माण कर सकता है। उन्होंने सर्वहितार्थ आध्यात्मिकता और भौतिकता का समन्वय करके एक सर्वसमर्थ वैदिक धर्म को हमारे समक्ष रखा। पण्डे-पुजारी चौंके, मगर महर्षि ने सभी कुरीतियों और कुनीतियों की उखाड़ फैंका। उनके जीवन का एक-एक क्षण राष्ट्र और समाज को समर्पित था। इस के लिए उन्हें बड़े से बड़ा कष्ट सहना पड़ा। मगर वे अपने जीवन तक की परवाह किए बिना निरन्तर उन बुराइयों को जड़-मूल से उखाड़ने के लिए जूझते रहे जिन्होंने हमें पंगु बना रखा था। पोंगा पन्थियों के चंगुल में फंस कर धर्म अपने वास्तविक स्वरूप और बुद्धिवाद को खो चुका था। महर्षि ने विज्ञान और बुद्धिवाद का इस में पुनः समावेश कर के एक नई दिशा दी। जड़ मूर्ति के समक्ष आंखें बन्द करके बैठे लोगों को उन्होंने चेतनता का वह अमर सन्देश दिया कि निराश और हताश भारतीय जनता अपनी रीढ़ की हड्डी में हलचल अनुभव करने लगी तथा कालान्तर में धीरे-धीरे कमर कस कर हर स्थिति से जूझने के लिये तैयार हो गई।

डा० पट्टाभि सीता रमैया अपने कांग्रेस के इतिहास में लिखते हैं-''स्वतन्त्रता संग्राम में 85 प्रतिशत से अधिक आर्य समाजियों ने अपना बलिदान दिया है।'' यहीं लोकमान्य तिलक का कथन है, ''दयानन्द स्वराज्य के प्रथम सन्देशवाहक थे।'' इसी बात को दादा भाई नौरोजी इस प्रकार कहते हैं, ''मुझे स्वामी दयानन्द के ग्रंथों में स्वराज्य की लड़ाई में बड़ी प्रेरणा मिलती है।'' महर्षि दयानन्द में राष्ट्र प्रेम कूट-कूट कर भरा हुआ था। उन्होंने वाइसराय नार्थब्रुक को साफ शब्दों में कहा था कि मैं प्रातः सायं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि मेरा देश पराई दासता से मुक्त हो।' अपने ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि बताया। उनके द्वारा ''स्थापित आर्य समाज'' उन दिनों स्वतन्त्रता संग्रामियों का पर्यायवाची बन गया था। एक सुप्रसिद्ध अंग्रेज ने लिखा है-''किसी भी आर्य समाजी की खाल को खुरच कर देखो तो अन्दर छिपा हुआ क्रान्तिकारी देश भक्त दयानन्द दिखाई देगा।'' चाहे वह राष्ट्रीय क्रान्ति हो, सामाजिक क्रान्ति हो या धार्मिक क्रान्ति हो। सब के पीछे महर्षि दयानन्द का तेज और तप कार्य कर रहा था। राष्ट्रीय जागरण के सभी पहलुओं की पृष्ठभूमि उन्होंने कट्टरता के साथ तैयार की और उसे कार्यरूप भी दिया। सरदार पटेल जी ने इसी भाव को इस प्रकार व्यक्त किया है-''मेरी दृष्टि में वे सच्चे राजनीतिज्ञ थे। चालीस वर्षों से जो कांग्रेस का कार्यक्रम चल रहा है, वह सब कार्यक्रम साठ वर्ष पूर्व ऋषि दयानन्द ने देश के लिए रखा था। सारे देश में एक भाषा, दलितोद्धार, स्वराज्य की घोषणा आदि सब दयानन्द ने देश को दिया।'' महर्षि दयानन्द सरस्वती चहुंमुखी जागरण के आद्य प्रवर्त्तक थे यह एक ध्रुव सत्य है। भूतपूर्व लोक सभा अध्यक्ष अनन्त शयनम् आयंगर ने क्या खूब कहा है-''गांधी जी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे। वे हमारी राष्ट्रीय प्रवृत्तियों और स्वतन्त्रता आन्दोलन के आद्य प्रवर्तक थे।''

पृष्ठ 2 का शेष-महर्षि दयानन्द के उपकार

पुस्तक घोषित किया और वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म बताया। महर्षि दयानन्द इस बात को भली-भांति जानते थे कि मूर्ति पूजा को, पाखण्ड और अन्धविश्वास को तब तक समाप्त नहीं किया जा सकता जब तक सत्य विद्या वेदों का जन-जन में प्रचार प्रसार न हो। बाल-विवाह की कुप्रथा का विरोध किया। विधवा विवाह का समर्थन किया, सती प्रथा को समाप्त करने के लिए कार्य किया। ये सभी कार्य महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन के छोटे से कार्यकाल में किए।

महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद के कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उपदेश देते हुए सारे संसार को आर्य बनाने का सन्देश दिया। उन्होंने कहा कि सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाना हमारा कर्त्तव्य है। महर्षि दयानन्द के उपकारों की कहां तक गणना करूं। उनके द्वारा किया गया प्रत्येक कार्य मानव जाति पर उपकार है। महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस के अवसर पर हम सभी मिलकर ऋषि दयानन्द के प्राणीमात्र पर किए गए उपकारों को स्मरण करें और समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के आधार पर ही समाज में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता है। इसलिए हम सबका कर्त्तव्य है कि महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर संकल्प लें कि हम ऋषि के कार्यों को आगे बढ़ाएंगे तथा उनके द्वारा किए गए उपकारों को कभी भी विस्मृत नहीं करेंगे।

ऋषि निर्वाण

लें०—श्री आचार्य विष्णुमित्र आर्य आदर्शनगर, नजीबाबाद जनपद-बिजनौर (उ० प्र०)

नवसस्येष्टि यज्ञों व सुगन्धित दीपमालाओं द्वारा सर्वत्र आमोद-प्रमोद की वर्षा करते हुए दीपावली पर्व का उत्सव कार्तिक अमावस्या के दिन प्राचीन काल से नियत है। इस महत्वपूर्ण पर्व को महर्षि दयानन्द के निर्वाण की असाधारण घटना ने और भी गौरवान्वित किया है। कार्तिक अमावस्या सम्वत् 1940 को वह सायं छः बजे का समय भी कैसा निर्मम था जिसने विश्व की महान् विभूति आर्यजनों के प्राणभूत महर्षि को सर्वदा के लिए छीन लिया। तथापि महापुरुषों का देहावसान साधारण व्यक्तियों की भांति शोको-त्पादक न होकर प्रेरणादायक होता है। वे परोपकार के लिए अपने शरीर के उत्सर्ग द्वारा उत्तम आदर्शों की स्थापना करके संयोजन करते हैं। कृतज्ञ जन उन के चरित्र के गुणानुवाद से प्रेरणा लेकर आनन्दानुभव करते हैं। महर्षि दयानन्द के बलिदान की गाथा आस्तिकता व अहिंसा का पावन उद्घोष है। तनिक इस अभूतपूर्व निर्वाण पर दृष्टिपात कीजिए-स्वामी जी महाराज जोधपुर नरेश महाराजा यशवन्त सिंह के निमन्त्रण पर जोधपुर पदार्पण करते हैं। वहां नीर-क्षीर का विवेक कराने वाले उनके व्याख्यानों में सदा की भांति न्याय होता था, नीति होती थी, युक्तियां थी, प्रमाणों से सुसज्जित सर्वोपरि सत्य का प्रकाश होता था। उनके उपदेशवारिवर्षण में स्नान करके सारे भ्रम दूर होकर श्रद्धालुओं के अन्तःकरण निर्मल हो जाते थे।

वेदामृत का आनन्द लेने के लिए जोधपुरा-धीश महाराजा यशवन्त सिंह जी भी स्वामी जी के दर्शनार्थ तीन बार उनके आसन पर आये तथा तीन बार ही श्री चरणों को अपने आवास पर निमन्त्रित किया। एक दिवस जब जोधपुराधीश के निवास पर दर्शन देने गये तब नन्हीं जान नाम की वारांगना को वहां से पालकी द्वारा विदा होते देख लिया, वारांगना तो वहां से चली गई परन्तु इस दृश्य को देख कर राष्ट्रहितैषी देवदयानन्द का हृदय द्रवित हो उठा। वे महाराजा को इस पापपङ्क से मुक्त करने के लिए देशहितैषिता की भावना से कहने लगे राजन्! राजा लोग तो सिंह समान समझे जाते हैं उनका कुक्कुरी सदृश वेश्या में आसक्त हो जाना सर्वथा अनुचित है। दुर्व्यसन के कारण धर्म-कर्म भ्रष्ट होकर पुरुष का अधःपतन स्वतः हो जाता है। आप पर देश का भार है इस दुर्व्यसन को तिलाञ्जलि देनी चाहिये।

भगवान् दयानन्द के उपदेशामृत से जहां सत्य-प्रिय शुद्ध भावभावित जन अमरपथ के पथिक बनकर शान्ति का अनुभव कर रहे थे वहीं संस्कार विहीन दुराग्रही व्यक्ति द्वेषाग्नि में जल रहे थे। उस देवता के मानस महत्व को विषयानन्द के रसिक मर्त्यलोक के साधारण जीव क्या समझते।

वेश्या व्यसन के विरुद्ध महाराज को किये उपदेश से खिन्नमना नन्हीं जान विकट वैर की विषम ज्वाला से अहर्निश सन्तप्त रहने लगी। वह स्वामी जी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने में लग गई, उसके साथ वे सब भी क्रियात्मक सहानुभूति में उद्यत हो गए जो अपने-अपने स्वार्थवश स्वामी जी के सत्य वचनों का स्पर्श न कर पाने के कारण मतभेद रखने लगे थे। परन्तु जब तक अपने ही भेदी न हों तब तक कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अपने ही दीपक से भवन भस्म होते हैं। ऐसे हीन नराधर्म ऋषिवर के पास भी रहते थे। आश्विन कृष्ण चतुर्दशी सम्वत् 1940 को ऋषिवर दुग्धपान करके सो गए। नहीं-नहीं आज दुग्धपान कहां किया था, आज तो वस्तुतः षड्यन्त्रकारियों ने पतित जगन्नाथ के द्वारा अनीति, अन्याय और नीचता से दुग्ध के साथ हलाहल विषम विष का प्रयोग कराकर सबके लिए दुखद घृणित अनर्थ करा दिया। आः!!! आश्चर्य है विश्वासपात्र जगन्नाथ ही ब्रह्मघाती बन गया।

ऋषिवर अपराधी जगन्नाथ को जान गये। वह अपने अधमतम अपराध को स्वीकार करते हुए प्रायश्चित की ज्वाला में जलने लगा। अपराधी को प्रायश्चित करते देखकर कर्मगति और फलभोग के विश्वासी दयानन्द अपने प्राणघातक के प्राणों की रक्षा का उपाय चिन्तन करने लगे। वे बोले जगन्नाथ! मेरे इस समय मरने से कई कार्य अपूर्ण रह गया है, तुम नहीं जानते इससे लोकहित को कितनी बाधा पहुंची है। इतना कह कर क्षमाशील दयालु दयानन्द अपने घातक को प्रेम सहित प्राण रक्षा के उपाय में प्रवृत करते हुए बोले जगन्नाथ! लो ये कुछ रुपये हैं इन्हें लेकर इस राज्य की सीमा से पृथक् नेपाल जा कर अपने प्राणों की रक्षा करो। किसी को भी अपने इस जघन्य कर्म का

पता न होने देना। इस प्रकार इस अहिंसाव्रती ने मारने वाले को भी जीवनदान देकर संसार के इतिहास में अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

भयंकर विष के प्रभाव से स्वामी जी महाराज की स्थिति उत्तरोत्तर बिगड़ती चली गई। परन्तु दु:ख व आश्चर्य तो डा० अलीमदर्शन खां पर होता है जिन की औषधि निरन्तर विष का कार्य कर रही थी। रोगाग्नि पर औषधी तैल बन कर क्यों प्रकट होती थी। इस रहस्य को परमपिता परमात्मा ही भली भांति जानते हैं। स्वामी जी जोधपुर से आबू पहुंचे। वहां भी चिकित्सा अनुकूल न देख भक्तों के आग्रह पर अजमेर प्रस्थान करते हैं। परन्तु विष का प्रभाव सारे शरीर से व्याप्त हो गया फलत: रोग ने उग्र रूप धारण कर लिया। अन्तर्दाह व शरीर पर छाले बढ़ते गए। इस विकट विपत में भी स्वामी जी धैर्यपूर्वक भक्तों की खिन्नता दूर करते रहते थे। दीपावली के दो दिन पूर्व लाहौर से पं० गुरूदत्त विद्यार्थी व जीवन दास जी भी स्वामी जी के दर्शनार्थ अजमेर पहुंच गये।

आश्चर्यजनक अन्तिम दृश्य का समय दीपावली का दिवस भी आ पहुंचा। स्वामी जी के तन को यद्यपि विषजन्य भयंकर व्याधि ने सत्वहीन कर दिया था तथापि वे प्रसन्नचित्त थे और अपने पवित्र प्रेम के सुपात्र भक्तों को कर्त्तव्य कर्म का पालन करने व आनन्दपूर्वक रहने का उपदेश करते रहे। ऐसी दशा में ही साढ़े पांच बज गये। स्वामी जी दैवेच्छा को भली भांति समझ चुके थे। इसलिए परमात्मा की व्यवस्था को सानन्द स्वीकार करके उसमें अपनी सहमति को भी सांझा करते हुए महाप्रयाण के लिए सन्नद्ध होकर भवन के सभी द्वार व वातायन खुलवा दिये और समागत भक्तों को अपनी पीठ के पीछे खड़ा कर दिया। फिर पूछा आज कौन सा पक्ष, तिथि व वार है, भक्त मोहन लाल ने कहा कि भगवन्! कार्तिक मास की अमावस्या व मंगलवार है। यह सुनकर अपनी दिव्यदृष्टि से भवन के चहुं ओर दृष्टिपात किया और गम्भीर ध्वनि से वेदपाठ प्रारम्भ हो गया, मानो दयानन्द के आत्मा व परमात्मा की अन्तरंग परिषद् प्रारम्भ हो गई। ऋषिभक्त गुरुदत्त उस कमरे के एक कोने में भित्ति के साथ लगे हुए निर्निमेष नेत्रों से दो सखाओं (ऋषि दयानन्द व परमात्मा) के अनिर्वचनीय मिलन का अवलोकन कर रहे थे। प्रभु मग्न दयानन्द ने वेदगान के अनन्तर परमप्रीति से पुलकित होकर संस्कृत शब्दों में परमात्मदेव का गुणगान किया। तत्पश्चात् हिन्दी में स्तुति करते आनन्दमग्न होकर गायत्री मन्त्री का पाठ करते-करते शान्त समाधिस्थ हो गये। कुछ काल पश्चात् समाधि की उच्चतम भूमि से उत्तर कर परमप्रिय पिता से आह्लादक वार्तालाप में निमग्न हो कर यतीत मैत्रीभाव से कहते हैं हे दयामय सर्व शक्तिमान् ईश्वर। तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा!!! तूने अच्छी लीला की। यह कहते हुए महर्षि दयानन्द ने लम्बे श्वास के साथ अपने प्राणों का त्याग किया।

पृष्ठ 5 का शेष-उस रात की कीमत क्या होगी

कभी बुझनी नहीं चाहिए। आज का मानव ज्ञान रूपी ज्योति के अभाव में ही अन्धकार में भटक रहा है। अगर हम महर्षि दयानन्द का सन्देश घर-घर पहुंचाकर वेद ज्ञान को फैलाने का कार्य करते हैं तो भटके हुए लोगों को सही मार्ग मिलेगा। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस हर वर्ष हमें यही प्रेरणा देता है कि हम बाहर की ज्योति के साथ-साथ अन्दर की ज्योति को भी जलाएं। बाहर के प्रकाश के बिना हमारा जीवन चल सकता है परन्तु जिसके अन्दर ज्ञान रूपी प्रकाश नहीं है वह फिर मनुष्य नहीं रह जाता है। मनुष्य की परिभाषा है मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति अर्थात् जो सोच विचार कर कार्य करता है वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है। बिना ज्ञान के व्यक्ति सोच विचार नहीं कर सकता और बिना ज्ञान के किया गया कर्म श्रेष्ठ नहीं होता। इसीलिए दीपावली का पर्व चिन्तन और मनन का पर्व है। यह पर्व हमें आत्मावलोकन की प्रेरणा देता है। अपने-अपने घरों में दीपक प्रज्वलित करते हुए हम अवश्य चिन्तन करें कि कहीं हमारे जीवन में तो अन्धकार नहीं है और अगर कहीं पर है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिए गए दिए गए वेद ज्ञान रूपी प्रकाश से उस अन्धकार को भी मिटाएं।

खोलो सभी द्वार वेद प्रचार मार्ग के,
कहा महर्षि ने अन्तिम सन्देश देने को।
सोचो आर्यों मिलकर विचारो,
महर्षि के उस सन्देश दीपावली को।।
तुम्हारा ऋण हम भारतवासी,
ऋषिवर कैसे चुका पाएंगे।
जले दीवाली पर लाखों दीप भले ही,
पर हम तो वेद ज्ञान का दीपक जलाएंगे।।

॥ ओ३म् ॥

अन्धन्तमः प्रविशन्ति ये ऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इ वते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ।। य.40/3

जो ईश्वर के स्थान पर कारण रूप और कार्यरूप प्रकृति की पूजा करते हैं वह घोर अंधकार में गिरते हैं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	कुलवन्त राय	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

उत्क्राम महते सौभगाय।

य. 11/21

हे मनुष्य ! महान ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज, राहों रोड, नवांशहर

WebSite: www.blmgirlscollege.com, email:blmcollege@yahoo.com
Phone No. 01823-220026, Fax: 01823-221474

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

प्रमुख विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
3. गरीब वर्ग की छात्राओं के लिये विशेष सुविधा।
4. एम.ए. (राजनीति विज्ञान, हिन्दी), पी.जी.डी.सी.ए., बी.ए., बी.कॉम, बी.एस.सी., ड्रैस डिजाइनिंग डिप्लोमा (U.G/P.G), कॉस्मोटॉलोजी डिप्लोमा (U.G/P.G) आदि कोर्स की व्यवस्था।
5. खेलों की उचित व्यवस्था (गत वर्षों से हैंडबाल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस में विश्वविद्यालय स्तर पर प्रथम एवं द्वितीय स्थान)

❖❖❖❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

डा.सी.एम.भण्डारी	सुरेन्द्र मोहन तेजपाल	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	उप प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

संसमिद् युवसे वृषन्नग्ने विश्वायर्न्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे न नो वसून्याभर॥ १॥

हे सुखो के वर्षक, सबके स्वामी, प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! आप संसार के सब पदार्थों की उचित व्यवस्था के अनुसार परस्पर मिलाते हो, और फिर उनका वियोग भी आप ही करते हो, आप अपनी शक्तियों से इस धरती पर चमक रहे हो, हे ऐसे महान् सामर्थ्य वाले भगवान् ! आप हमें सब प्रकार के ऐश्वर्य दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

दीपावली के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।।

❖❖❖

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

❖❖❖

अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

देशबन्धु भल्ला एडवोकेट	सोहन सिंह	जे.के.दत्त	ए.एस. गिल
प्रधान	उपप्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अस्मासु भद्र द्रविणानि धत्त।

(कल्याणकारी ऐश्वर्य धन हम सब को प्राप्त हो)

न त्वहं कामयेत राज्यम् न सुखम् न पुनर्भवम्।

कामयेत दुख तप्तानाम् प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

डी.ए.एन.आर्ट एंड क्राफ्ट (A.C.T) कालेज नवांशहर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में

निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. नवांशहर क्षेत्र में आर्ट्स एंड क्राफ्ट का एक मात्र कालेज
2. अनुभवी तथा ट्रेंड स्टाफ।
3. सुसज्जित मैदान।
4. शानदार पेटिंग सिखाने का प्रबन्ध।
5. सभी प्रकार की आधुनिक विद्याओं से युक्त।
6. बोर्डिंग का उचित प्रबन्ध
7. शत्-प्रतिशत् परीक्षा परिणाम।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

विनोद भारद्वाज	बख्तावर सिंह	विपिन तनेजा	आशा शर्मा
प्रधान	**उपप्रधान**	**सैक्रेटरी**	**प्रिंसीपल**

॥ ओ३म् ॥

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते॥

(सब प्रकार के ऐश्वर्य के अभिलाषी) हे मनुष्यो, तुम परस्पर मिल कर चलो, मिल कर बातचीत करो, ज्ञानी बन कर तुम अपने मनो को भी एक बनाओ, जैसे कि तुम से पहिले विद्वान देव पुरुष सम्यक् ज्ञान वान् और एक मति वाले होकर अपना भाग प्राप्त करते रहे हैं।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. *अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।*
2. *नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।*
3. *अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।*
4. *आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।*

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	ललित शर्मा	जिया लाल शर्मा	आरती कालिया
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न् देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	ललित कुमार शर्मा	अचला भल्ला	अमित सभ्रवाल
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्

ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दु:ख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार विमन नवांशहर

❑ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❑

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

◆◆◆

विनोद भारद्वाज	मीनाक्षी शर्मा	गुरविन्द्र कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि।

(ऋग्वेद. 1/4/6)

हम सदा परमेश्वर की शर्मणि–शरण में रहें।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	सतीशा शर्मा	सविता उप्पल
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! मेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

अरुण थापर	**श्रीमती राजेश शर्मा**	**रेखा कौल**
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

सख्ये ते इन्द्र याजिनो मा भेम शवसस्पते।

त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम।।

भावार्थ: प्रभु के भक्तों में ऐसा विलक्षण बल आता है कि वे किसी से भी डरते नहीं क्योंकि जिनका रक्षक स्वयं प्रभु होवे, उनको डराने वाला कौन हो सकता है? वहीं प्रभु सदा अपराजित और हमेशा विजयी है इसलिये उसी को नमन करने योग्य है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य गर्ल्ज सी. सै.स्कूल, पुराना बाजार, दरेसी रोड लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में शहर की एक सौ दस वर्ष पुरानी संस्था

प्रमुख विशेषताएं

1. नर्सरी कक्षा से बारहवीं कक्षा तक गणित व विज्ञान विषयों के लिये **Smart Classes** की विशेष व्यवस्था।
2. अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम में पढ़ाने का उचित प्रबन्ध।
3. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ
4. स्वच्छ जल हेतु फिल्टर, बिजली के लिये जनरेटर, अग्निशमन यंत्रों इत्यादि सभी आधुनिक सुविधाओं से सम्पन्न
5. सत्र 2012-13 में बोर्ड परीक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम।
6. गत वर्ष की अपेक्षा छात्राओं की संख्या में वृद्धि।
7. कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
8. भव्य भवन खुले व हवादार कमरे, समृद्ध पुस्तकालय व सुसज्जित साईंस लैब।
9. छात्राओं की ज्ञान वृद्धि के लिये शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाने की व्यवस्था।
10. सांस्कृतिक व सह सहायक गतिविधियों का आयोजन
11. **Morning Assembly** में नैतिक मूल्यों व अच्छे संस्कारों को सुदृढ़ करने पर विशेष चर्चा।
12. प्रबन्धकृर्त सभा के सभी सदस्य संस्था को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिये निरन्तर प्रयासरत।

विशेष नोट: जरूरतमंद व योग्य छात्राओं के लिये निशुल्क पुस्तकें, वर्दियां, स्वैटर व जूते।

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

विजय सरीन	वजीर चंद	रणवीर शर्मा	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	उपप्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।
शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः ॥

भावार्थ– हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस) के पावन पर्व पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री–नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाबी पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विद्युत जेनरेटर तथा कैंटीन की उत्तम सुविधा।
6. खेलने के लिये खुला मैदान।
7. शानदार बोर्ड परीक्षा परिणाम।
8. उत्तम पुस्तकालय की सुविधा

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार	मुनीष मदान	सतपाल नारंग	निर्मल कान्ता
प्रधान	प्रबन्धक	कोषाध्यक्ष	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना ऋ. 1/3/12

ज्ञानमयी वेद वाणी अपने ज्ञान से ही बड़े भारी ज्ञान सागर का उत्तम रीति से ज्ञान कराती है।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व

के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से सम्बन्धित संस्था

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

में एल.बी.एस. कॉलजिएट सी.सै.स्कूल के अधीन +1, +2 के साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की स्तरीय शिक्षा का प्रबन्ध है।

बी.ए.कक्षाओं में हिन्दी साहित्य, पंजाबी, पंजाबी साहित्य, अंग्रेजी, अंग्रेजी साहित्य, संस्कृत, इक्नामिक्स, राजनीतिक शास्त्र, इतिहास, पब्लिक, एडमिनिस्ट्रेशन, कम्प्यूटर एप्ली, फाईन आर्ट्स, गणित, साइकॉलॉजी, संगीत (कंठ्य), होम साईंस, फिजीकल एजुकेशन, ऑफिस मैनेजमेंट, फैशन डिजाइनिंग विषय पढ़ाये जा रहे हैं।

स्नातकोत्तर स्तर पर एम.ए.पंजाबी, एम.ए. इतिहास, एम.एस.सी.-आई.टी. एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कम्प्यूटर एप्ली. एम.एस.सी. फैशन डिजाइनिंग एवं पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन ड्रैस डिजाइनिंग, पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन कास्मेटॉलॉजी की कक्षाएं सफलतापूर्वक चल रही हैं।

इनके साथ बी.सी.ए., बी.बी.ए. तथा बी.कॉम के शिक्षण का भी प्रबन्ध है।

विशेषताएं

1. वातानुकूलित विशाल पुस्तकालय
2. बहुद्देश्यीय विशाल सभागार
3. सुविधा सम्पन्न छात्रावास।
4. वाई फाई प्रांगण।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों से लैस प्रांग्रण।
6. उच्च तकनीकी युक्त वातानुकूलित कम्प्यूटर प्रयोगशाला।
7. जैनरेटरों एवं वाटर कूलरों (आर.ओ.)
8. एन.सी.सी.फैशन डिजाइनिंग का सुचारू प्रबन्ध।
9. गांवों से छात्राओं को लाने ले जाने हेतु बसों का उचित प्रबन्ध।

शैक्षिक एवं शिक्षेत्तर उपलब्धियों के लिये पंजाबी विश्वविद्यालय में अपनी विशेष पहचान रखने वाली संस्था

डा.सूर्यकांत शोरी	**भारत भूषण मैनन एडवोकेट**	**केवल जिन्दल**	**डा.नीलम शर्मा**
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देवत्तं ब्रह्म गायत।

ऋग्वेद 1/37/4

ईश्वर प्रदत्त वेद का सदा गान करो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल स्कूल, बरनाला

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

विशेषताएं

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।
2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।
3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।
4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।
5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य माडल स्कूल बरनाला में दाखिल करवाये।

सम्पर्क करें

हरमेल सिंह जोशी	भारत भूषण मेनन	राजेश कुमार गांधी	उर्मिल सिंगला
प्रधान	मैनेजर	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

ऋषि निर्वाण दिवस एवं दीपावली के

पावन पर्व पर

गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत-प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह-क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध।

प्रेम कुमार बांसल एडवोकेट
प्रधान

भारत भूषण मैनन एडवोकेट
वरिष्ठ उप प्रधान

संजीव शोरी
मैनेजर

भारत मोदी
सचिव

रामकुमार सोबती
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

भावार्थ: हे प्रभु हमें अंधकार से हटा कर प्रकाश की ओर ले चलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

❒ विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित विशाल भवन।
2. उच्च शिक्षित, अनुभवी तथा निष्ठावान अध्यापक।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां तथा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन
4. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा (2012) में प्रिया ने पंजाब में सोहलवां तथा जिला बरनाला में पहला स्थान प्राप्त करके नाम रोशन किया।
5. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
6. फिल्टर पानी का प्रबन्ध और साइलेंट जेनरेटर।
7. बच्चों के लिये प्राथमिक सहायता उपलब्ध।
8. बच्चों के लिये हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों ही माध्यम उपलब्ध।

☆☆☆

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन	भारत मोदी	पवन सिंगला	बसन्त शोरी
प्रधान	उप प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर

संजीव शोरी	वन्दना गोयल	अनीता मित्तल
सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल	डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, श्रुणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं– हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

"अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।"

अनिल कुमार	**निहाल चंद एडवोकेट**	**सुषमा कुमारी**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अस्मे धेहि जातवेदो महिश्रवः

ऋग्वेद: 1/97/4

हे ज्ञान स्वरूप प्रभो ! आप हम में उत्तम यश, धन और ज्ञान धारण करें।

ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं
वैदिक कन्या पाठशाला औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. आधुनिक कम्प्यूटर लैब।
5. वाटर कूलर तथा ध्वनि रहित जनरेटर का उचित प्रबन्ध।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. साफ सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
8. आठवीं कक्षा तक के बच्चों को दोपहर के मुफ्त भोजन की सुविधा एवं मुफ्त पुस्तकें।
9. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
10. गरीब एवं योग्य छात्राओं को आर्थिक सहायता।
11. बोर्ड की कक्षाओं का शत प्रतिशत परिणाम तथा सैशन 2011-12 में दसवीं की दो छात्राओं तथा+2 की दो छात्राओं ने स्टेट मैरिट में स्थान प्राप्त किया।
13. कल्चर संगीत कार्यक्रम के लिये योग्य तथा अनुभवी शिक्षा का प्रबन्ध।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	अशोक कुमार अग्रवाल	विजय अग्रवाल	नीरू शैली
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी ओर महाश्सय होते हैं, सत्पुरुष कहलाते हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै. स्कूल, बठिंडा

Ph.No. 0164-2238328

विशेषताएं:

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, R.O पानी आदि मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

अश्विनी कुमार मोंगा
प्रधान

श्रीमती ऊषा गोयल
संरक्षक

गौरी शंकर
वरिष्ठ उप प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग
सचिव

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

सत्पुरुष:- सत्यप्रिय, धर्मात्मा, विद्वान, सबके हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के

पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

मुख्य विशेषताएं

1.उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग

2.खुले तथा हवादार कमरे।

3. वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर बल।

4. शानदार परीक्षा परिणाम

5. उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र कौशिक	**अश्विनी मेहता**	**चन्द्रमोहन**
प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थ: वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां,जालन्धर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य
प्रधान

विशाल पुरुथी
मैनेजर

श्रीमती सारिका
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरिताद्‌वाधस्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

***

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली के शुभ अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

***

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के विकास के लिये निरन्तर कार्यरत, नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।

***

अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू सलूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

इमा ब्रह्मा सधमादे जुषस्व

ऋग्वेद 20/11/3

इन वेद वचनों को, हे विद्वन ! हर्षस्थान व सभा सदन में सेवो अर्थात बोलो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10.रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11.प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

शिक्षा जगत में महकता हुआ चमन

सोम प्रकाश	**शैलेन्द्र मेहता**	**किरण जिन्दल**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पंडित:- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

–महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

***

हार्दिक शुभकामनाएं

***

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❐ विशेषताएं ❐

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा

मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल
उपप्रधान

मोनिका बांसल
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❒ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❒

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।

2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।

3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।

5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।

6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।

7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	कृष्ण गोपाल	एस.के. शर्मा
प्रधान	उपप्रधान	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥ (यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज आफ एजुकेशन

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।

2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।

3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।

5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।

6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।

7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	कृष्ण गोपाल	उमेश धीमान
प्रधान	उपप्रधान	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस एवं दीप-उत्सव "दीपावली" के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल हाई स्कूल-मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

❒ विशेष आकर्षण ❒

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. +2 की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व साप्ताहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल	**नरेन्द्र सूद**	**समीना शर्मा**
प्रधान	मैनेजर	प्राचार्य

॥ ओ३म् ॥

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर।

सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से शुभ कार्यों में खर्च करो।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस व दीपावली पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य कालेज फार वूमैन खरड़

1. कम्प्यूटर शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
2. कढ़ाई सिलाई का विशेष प्रबन्ध।
3. फूल बनाना, खिलौने बनाने की विशेष शिक्षा।
4. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
5. अनुभवी तथा मेहनती स्टाफ।

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये, उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

अजय अग्रवाल	अशोक शर्मा	अमनदीप कौर
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में यज्ञ के पश्चात दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य के साथ सामूहिक चित्र खिंचवाते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा जी। सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं सभा मंत्री श्री रणजीत आर्य।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी पतंजलि योग संस्थान के संस्थापक बाबा रामदेव जी के साथ पुरानी यादों को ताजा करते हुये।

यज्ञशाला का मनोहर दृश्य ऊपर व नीचे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलशन शर्मा जी हवन यज्ञ करते हुये।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुये असम के राज्यपाल माननीय श्री गंगाप्रसाद जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, महामंत्री श्री प्रकाश आर्य जी एवं अन्य।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में भाजपा के प्रवक्ता श्री सुधांशु त्रिवेदी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी।

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नई दिल्ली में देश विदेश से पधारे आर्य महानुभावों का अपार जनसमूह।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड, जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।